हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

सं. 137 अप्रैल - जूलाई 2013 ISSN 0972-2386

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

http://www.cmfri.org.in

माननीय केंद्र कृषि मंत्री सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र का मुआइना करते हुए

भाकृअनुप
ICAR

कडलमीन™
cadalmin

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पी.बी.सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ., कोचीन - 682 018

विषय सूची

श्री शरद पवार, माननीय केंद्र कृषि मंत्री का सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र के समुद्री पिंजरा खेत में मुआइना 3

डॉ.ए.गोपालकृष्णन का सी एम एफ आर आइ के निदेशक के रूप में कार्यग्रहण 5

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में भारत का पहला ब्रूड बैंक, पुनःपरिसंचरण जलकृषि व्यवस्था और समुद्री संवर्धन समुच्चय सी एम एफ आर आइ 6

द्वारा गुजरात के आदिम जनजाति समुदाय के लोगों को उत्तम आजीविका के साथ सशक्तीकरण 8

कोच्ची में ''एस ए ए आर सी क्षेत्र में जलकृषि के अच्छे व्यवहार और सीखे गए पाठ'' विषय पर सी एम एफ आर आइ - 10

एस ए ए आर सी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला 12

अनुसंधान मुख्य अंश 17

कार्यशाला 18

घटनाएं 20

प्रौद्योगिकी स्थानांतरण 21

सी एम एफ आर आइ प्रकाशन 24

कृ वि कें (एरणाकुलम) समाचार 25

कार्यक्रम में सहभागिता 26

कार्मिक समाचार

प्रकाशक

डॉ. जी. सैदा राव
निदेशक
केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बोक्स सं.1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ
कोचीन - 682 018, केरल, भारत
दूरभाष : 0484-2394867
फैक्सः 91-484-2394909
ई-मैलः director@cmfri.org.in
वेबसाइटः www.cmfri.org.in

संपादकीय मंडल

डॉ. आर. सत्यदास, अध्यक्ष
डॉ. आर. नारायणकुमार
डॉ. सी. रामचन्द्रन

संपादक

वी. एड्विन जोसफ

सचिवीय सहायता

पी. आर. अभिलाष

हिंदी अनुवाद

ई. के. उमा

निदेशक कहते हैं

प्रिय सहकर्मियो,

मैं संतोष के साथ सी एम एफ आर आइ के निदेशक के पद से अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हो रहा हुं. पिछले पांच वर्षों के मेरे कार्यकाल के दौरान सारे वैज्ञानिकों और विभिन्न वर्गों के कर्मचारियों के अथक प्रयास से संस्थान को नई उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं. संस्थान में प्रचलित शांतिपूर्ण वातावरण से विभिन्न अनुभागों, प्रभागों और अधीनस्थ केंद्रों के बीच अच्छा संबंध स्थापित हुआ और इस से संस्थान को सम्मान प्राप्त हुए. इसी तरह परिषद से भी हमारे परियोजना प्रस्तावों के अनुमोदन और वित्तीय सहायता के रूप में सहयोग और सहकारिता मिली और इस वजह से समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान के क्षेत्र में सी एम एफ आर आइ को विश्व स्तर का स्थान प्राप्त हुआ. यह सूचित करने में अत्यधिक खुशी है कि XII वीं योजना के दौरान संस्थान में ChloRIFFS विषयक प्रमुख परियोजना शुरू की जाएगी. इस परियोजना द्वारा हम समुद्री मात्स्यिकी पूर्वानुमान और प्रबंधन में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँच रहे हैं, जो विश्व में ही पहला कदम और अत्यंत कठिन प्रयास भी है. मेरे पूरे कार्यकाल के दौरान सभी प्रकार के मार्गदर्शन, सहयोग और प्रोत्साहन देने के लिए मैं माननीय महानिदेशक डॉ.एस.अय्यप्पन के प्रति आभारी हुं. इसी प्रकार मुझे सभी प्रकार के सहयोग देने के लिए उप महानिदेशक (स.मा.), सहायक महानिदेशक (स.मा.) और भा कृ अनु प के सभी मात्स्यिकी संस्थानों के निदेशकों के प्रति मैं आभारी हुं. सी एम एफ आर आइ के प्रशासनिक एवं वित्तीय मामलों को सक्रियता और दक्षता से निष्पादित करने के लिए श्री राकेश कुमार की अध्यक्षता के प्रशासनिक अनुभाग और श्री ए.वी.जोसफ की अध्यक्षता के वित्तीय अनुभाग को मैं कृतज्ञता अदा करता हुं. संस्थान को ख्याति मिलने के लिए उत्कृष्ट योगदान दिए गए वैज्ञानिकों के प्रति मैं आभारी हुं. मैं हमारे प्रलेखन केंद्र को वैश्विक दृश्यमानता से सक्रिय बनाने के लिए प्रयास किए गए श्री एड्विन जोसफ की सराहना करता हुं. अंत में, संस्थान के कई सपनों को साकार करने में और माननीय महानिदेशक सहित कई महान लोगों की आशा के अनुसार अगले दशक में सी एम एफ आर आइ को वैश्विक समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (जी एम एफ आर आइ) के रूप में परिवर्तित करने को नींव रखने में सहयोग देने के लिए सी एम एफ आर आइ के सभी कार्मिकों को मैं सलामी देता हुं. इस प्रयास की ओर मार्ग दिखाने के लिए शरणम अय्यप्पा संस्थान की रक्षा करें.

नमस्ते

डॉ.जी.सैदा राव
निदेशक

सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन स्थापित केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केंद्र याने कि मंडपम कैंप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा सात अनुसंधान केंद्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

माननीय केंद्र कृषि मंत्री श्री शरद पवार जी कारवार अनुसंधान केंद्र के समुद्री पिंजरा खेत में स्नाप्पर अंडशावक का निरीक्षण करने का दृश्य

श्री शरद पवार, माननीय केंद्र कृषि मंत्री का सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र के समुद्री पिंजरा खेत में मुआइना

माननीय केंद्र कृषि मंत्री एवं अध्यक्ष, भा कृ अनु प श्री शरद पवार ने सचिव, पशुपालन, डेरी एवं मात्स्यिकी विभाग श्री जी. सी. पति; सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प डॉ. एस. अय्यप्पन; निदेशक, सी एम एफ आर आइ डॉ. जी. सैदा रावु; निदेशक, भा कृ अनु प अनुसंधान समुच्चय - गोवा डॉ. एन.पी. सिंह; वेरावल, मुम्बई और मांगलूर केंद्रों और कोच्ची के वैज्ञानिक गण एवं कई विशिष्ट व्यक्तियों के साथ दिनांक 19 अप्रैल, 2013 को कारवार के समुद्री पिंजरा खेत का मुआइना किया. इस अवसर पर वेसेल के ओनबोर्ड पर माननीय कृषि मंत्री ने सी एम एफ आर आइ द्वारा प्रकाशित 'भारत में पिंजरा जलकृषि' विषयक पुस्तक का विमोचन किया. बाद में विशिष्ट व्यक्तियों ने सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र के प्रयोगशाला एवं कार्यालय समुच्चय और कार्यालय में सजाए गए प्रदर्शनी का मुआइना किया. मंत्री ने विशिष्ट व्यक्तियों, अनुसंधानकारों तथा स्थानीय मछुआरों, भारत के विभिन्न भागों से आए उद्यमियों और पिंजरा मछली पालन में लगे हुए ट्राइबल लोगों के साथ आपसी विनिमय किया.

माननीय मंत्री ने सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकियों की सराहना की और पालन की जाने वाली मछली जातियों की संख्या बढ़ाने के लिए ब्रूड बैंकों की स्थापना करने और पर्यावरण को बाधा करने के बिना प्राकृतिक संपदाओं से मछली संततियों का संग्रहण करने के बारे में बताया. इस सिलसिले में, मात्स्यिकी प्रबंधन के उद्देश्य से जैवविविधता के परिरक्षण के लिए प्राकृतिक संपदाओं की उपयोगिता तथा उत्पादन में बढ़ोत्तरी करने के लिए सी एम

माननीय मंत्री प्रदर्शनी में कोबिया मछलियों का निरीक्षण करते हुए

महानिदेशक, भा कृ अनु प माननीय केंद्र मंत्री को शंबु पालन का नमूना दिखाते हुए

माननीय मंत्री श्री शरद पवार और सैदा रावु

माननीय मंत्री श्री शरद पवार कारवार अनुसंधान केंद्र के संग्रहालय का मुआइना करते हुए

माननीय मंत्री श्री जी.सी. पति, सचिव, डी ए एच डी एफ, अड्मिरल बी.के.जैन और डॉ. एस. अय्यप्पन, महानिदेशक, भा कृ अनु प के साथ वेसेल के ओनबोर्ड पर

एफ आर आइ द्वारा स्थापित कृत्रिम भित्तियों की सराहना भी की गयी. माननीय मंत्री ने यह घोषित किया कि सी एम एफ आर आइ भारत में समुद्रकृषि के लिए रूपरेखा तैयार करेंगे.

महानिदेशक ने कृषि मंत्री को भारत में प्रग्रहण मात्स्यिकी प्रबंधन और भारत में मछली उत्पदन बढ़ाए जाने के लिए आगे के तरीके के बारे में बताया. उन्होंने पश्चिम तट पर मछली संततियों और आहार की आवश्यकता की पूर्ति के लिए ब्रूड बैंकों, सातलाइट हैचरियों और खाद्य उत्पादन एककों की स्थापना की आवश्यकता पर बात की.

सचिव, डी ए एच डी एफ डॉ. जी.सी. पति ने पिंजरा मछली पालन द्वारा मछली उत्पादन बढ़ाए जाने तथा मछली संतति और अंडशावक बैंकों की स्थापना के लिए एन एफ डी बी और कृषि मंत्रालय की मदद देने का आश्वासन दिया.

सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित, निदर्शन की गयी और प्रचारित खुला समुद्र पिंजरों की प्रौद्योगिकी वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी को सहभागिता आधार पर मानव कल्याण के लिए प्रयोगशाला से खेत तक हस्तांतरित करने का उत्तम उदाहरण है.

(कारवार अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

माननीय मंत्री श्री शरद पवार कारवार अनुसंधान केंद्र के संग्रहालय का मुआइना करते हुए

माननीय मंत्री गुजरात के सिदी जनजाति सदस्यों के साथ बातचीत करने का दृश्य

डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ की सेवानिवृत्ति

डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ दिनांक 31.07.2013 को अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हो गए. डॉ. जी.सैदा रावु, जो भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों में प्रमुख हैं, दिनांक 06.01.1977 को कृषि अनुसंधान सेवा के प्रथम बैच में नियुक्त हुए और उन्होंने दिनांक 08 जुलाई 2008 को सी एम एफ आर आइ के निदेशक के पद पर कार्यग्रहण किया. वर्ष 2008 से 2013 तक के उनके नेतृत्व में सी एम एफ आर आइ समुद्री मात्स्यिकी के क्षेत्र में विश्व स्तर की महिमा के शिखर तक पहुँच गया. निदेशक के रूप में उनके प्रभावशाली कार्यकाल के दौरान सी एम एफ आर आइ के अनुसंधान परिणामों को कई हस्तक्षेपों के रूप में सभी राज्यों के साथ एकीकृत किया जा सका और देश की समुद्री मात्स्यिकी को टिकाऊ स्तर पर कायम रखा जा सका और संस्थान के अनुसंधान आंकडों को भारत सरकार के आधिकारिक आंकडों के स्तर के रूप में स्वीकार्यता प्राप्त हुई. इस अवधि के दौरान सी एम एफ आर आइ ने 15 पेटेन्टों का फाइल किया और दो उत्पादों जैसे कडलमीन™ हरा शंबु एक्स्ट्रैक्ट और कडलमीन™ हरा शैवाल एक्स्ट्रैक्ट का वाणिज्यीकरण किया. भारत में पिंजरा समुद्री संवर्धन को अग्रणी बनाने और इस के साथ साथ कोबिया, सिल्वर पोम्पानो, ग्रीसी ग्रूपर, पेर्लस्पोट और रेड स्नाप्पर मछलियों का प्रजनन साध्य बनाने में सफल हो गए. उन्होंने प्रौद्योगिकी की दृष्टि से जीवंत और आर्थिक दृष्टि से अनुकूल पिंजरा मछली पालन का निदर्शन किया, जिस से समुद्री मछली उत्पादन में क्रांतिकारी परिवर्तन होगा. यह प्रौद्योगिकी बडे पैमाने में स्वीकार्य हो रही है. येलोफिन ट्यूना के पॉप-अप साटलाइट टैगन में सफलता, समुद्री जलनिकायों के पास भूमि पर अधारित पेर्लस्पोट मछली पालन, सिल्वर पोम्पानो और सजावटी मछलियों का खाद्य आदि उनके नेतृत्व में प्राप्त प्रमुख वैज्ञानिक उपलब्धियों में कुछ हैं. पर्णहरित पर आधारित दूर संवेदन उपयुक्त करके भारतीय मात्स्यिकी पूर्वानुमान व्यवस्था की परियोजना और एक प्रमुख उपलब्धि है. वर्ष 2008-2013 के दौरान मंडपम, मांगलूर, विषिंजम, कारवार, टूटिकोरिन क्षेत्रीय / अनुसंधान केंद्रों के प्रयोगशाला एवं कार्यालय मकानों के निर्माण, विशाखपट्टणम में प्रयोगशाला मकान का विस्तार, वेरावल क्षेत्रीय केंद्र के कार्यालय मकान में परिवर्तन, मुख्यालय में आवास गृह, चेन्नई अनु. केंद्र के कोवलम के लिए प्रयोगशाला मकान, पुरी क्षेत्र केंद्र के लिए स्थायी भूमि, मुख्यालय में अतिरिक्त तल का निर्माण, मंडपम में अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षणार्थी होस्टल, सभी केंद्रों के बीच वी पी एन संपर्क, उपर्युक्त सारे केंद्रों के प्रयोगशाला एवं कार्यालय का सुधार, सी आइ एफ ई पुराने कैंपस के द्वितीय तल में मुम्बई अनुसंधान केंद्र का स्थायी प्रयोगशाला एवं मकान, मालवान, मुम्बई के केंद्र सरकार आवास समुच्चय में 27 आवास गृह, आर ए एस सुविधा की स्थापना, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में पर्यावरण चैम्बर एवं समुद्री संवर्धन समुच्चय आदि अवसंरचनाओं के विकास कार्य में हम गवाह हो गए. लंबी अवधि के बाद पोतों के बेडा में दो नए अनुसंधान पोत जोडे गए वे हैं एफ वी सिल्वर पोम्पानो, जिसका हाल ही में कमीशन किया गया और दूसरे का कमीशनिंग अगली तिमाही में हो जाएगा. e-prints@CMFRI द्वारा सी एम एफ आर आइ की सभी उपलब्धियों की विश्व स्तर पर दृश्यमानता मिल गयी. संस्थान के प्रकाशन "इंडियन जर्नल ऑफ फिशरीस" की ऑनलाइन सुविधा और इसे अंतर्राष्ट्रीय इंपैक्ट फैक्टर 0.195 और एन ए ए एस रेटिंग 6.2 प्राप्त हुई.

जलवायु परिवर्तन पर इंडो - आस्ट्रेलिया रणनीतिपरक सहभागिता, एशियन जलकृषि में उद्गामी समस्याओं पर एन ए सी ए-सी एम एफ आर आइ संगोष्ठी, इन्टरनैशनल बेलमोन्ट फोरम और जी8 रिसर्च काउन्सिल्स इन्टरनैशनल ओपोर्च्युनिटीस फन्ड, एस ए ए आर सी क्षेत्र की जलकृषि में सीखे गए पाठ और अच्छे व्यवहार पर अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा और 9 वां इंडियन फिशरीस फोरम का आयोजन आदि उनके चमत्करपूर्ण कार्यकाल की महत्वपूर्ण घटनाएं थी.

उनके कार्यकाल में कृषि विज्ञान केंद्र, एरणाकुलम को अभूतपूर्व ख्याति और दृश्यमानता प्राप्त हुई. संस्थान को इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हुआ.

टी एस पी के अंदर गुजरात के सिदी आदिवास समुदाय को पिंजरा मछली पालन पर आधारित आजीविका का स्थायी विकल्प देने में सहायता प्रदान की.

इन सब के अतिरिक्त डॉ.जी.सैदा रावु का महत्वपूर्ण योगदान संस्थान के कर्मचारियों के बीच संतोष, सुरक्षा और आत्मविश्वास बढ़ाने और तत्द्वारा सी एम एफ आर आइ वैज्ञानिक उपलब्धियों के नए शिखर पर पहुँचा.

सी एम एफ आर आइ के इतिहास में अमिट छाप अंकित किए गए हमारे अजेय निदेशक को हम सलामी देते हैं.

डॉ.ए.गोपालकृष्णन का सी एम एफ आर आइ के निदेशक के पद पर कार्यग्रहण

डॉ.ए.गोपालकृष्णन, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक, एन बी एफ जी आर यूनिट, कोचीन ने दिनांक 31 जुलाई, 2013 को सी एम एफ आर आइ के निदेशक के पद पर कार्यग्रहण किया.

वर्ष 1962 में डॉ.गोपालकृष्णन का जन्म हुआ और उन्होंने वर्ष 1991 में सी एम एफ आर आइ के सी ए एस से समुद्री संवर्धन में डॉक्टरी उपाधी हासिल की.

वर्ष 1989 में वे एन बी एफ जी आर, लखनऊ/ अलहाबाद में वैज्ञानिक के पद पर नियुक्त हुए. डी एन ए मार्केर्स उपयुक्त करके मछलियों के आनुवंशिक स्टॉक की पहचान, mtDNA मार्केर्स उपयुक्त करके मछलियों का डी एन ए बारकोडिंग, देशीय मछलियों के शुक्र के परिरक्षण के लिए हिमशीतीकरण के नयाचार का विकास, देशीय मछलियों का प्रग्रहण अवस्था में प्रजनन, मछली पुनरुत्पादन और मछली आनुवंशिक स्टॉक पहचान आदि उनकी विषय विशेषज्ञता के क्षेत्र हैं. उनके अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय लेख प्रकाशित हुए हैं. मछली जननकोशों के हिमशीतीकरण के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदानों के लिए उन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए.

पुरस्कार / सम्मानः एशियन फिशरीस सोसाइटी (ए एफ एस) योग्यता पुरस्कार, 2011, एन बी एफ जी आर उत्कृष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार 2008-09, नैचर कन्सर्वेटेर्स द्वारा डॉ.वी.जी.जिंगरन स्वर्ण पदक, 1992 (टीम सदस्य), एन ए टी सी ओ एन और फेलो ऑफ नैशनल अकादमी ऑफ अग्रिकल्चरल सयन्सस द्वारा वरिष्ठ वैज्ञानिक पुरस्कार.

नया मत्स्यन पोत *सिल्वर पोम्पानो*

एन आइ सी आर ए परियोजना के भाग के रूप में सी एम एफ आर आइ ने भारतीय समुद्री मात्स्यिकी पर जलवायु से जुडे हुए संघातों का अध्ययन करने के लिए 4.75 करोड रुपए का खर्च करके 19.75 मीटर की लंबाई का अनुसंधान पोत *एफ.वी.सिल्वर पोम्पानो* खरीदा. गोवा शिपयार्ड लिमिटड में पोत का निर्माण किया गया और दिनांक 24.07.2013 को डॉ.बी.मीनाकुमारी, डी डी जी (मा.), प्रोफसर डॉ.के.ए.साइमन, निदेशक, के एम एस एम ई, डॉ.टी.के.श्रीनिवास गोपाल, निदेशक, सी आइ एफ टी, डॉ.जी.सैदा राबु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ और अन्य महान व्यक्तियों की उपस्थिति में सी एम एफ आर आइ को सौंपा दिया. एन आइ सी आर ए भारतीय कृषि पर जलवायु परिवर्तन से हाने वाले सुभेद्यता, संघात और अनुकूलन के विकल्पों पर अध्ययन करने के उद्देश्य से भा कृ अनु प द्वारा प्रारंभ की गयी परियोजना है. सी एम एफ आर आइ भारत में समुद्री मात्स्यिकी के क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन से संबंधित अनुसंधान कार्य करने वाला प्रमुख संस्थान है.

प्रमुख सुविधाएं और उपकरण

नौचालन और शक्ति

पोत में 4 स्ट्रोक वोल्वो पेन्टा मेक 500 एच पी@ 1800 आर एम पी मराइन इंजन लगाया गया है. पोत के डेक में वैज्ञानिकों और पोत दल के लिए कैबिन, जीवविज्ञान प्रयोगशाला, मौसम स्टेशन, गैली, भोजनशाला एवं शौचालय सजाए गए हैं. हाइड्रोलिक रूप से परिचालित 1000 मी. की लंबाई के ट्राल विन्च, हर एक ड्रम में 0 से 40 मी./मिनट की गति से मुख्य इंजन से हाइड्रोलिक शक्ति देने वाली 12 मि.मी. के व्यास की स्टील वायर की रस्सी लगायी गयी है. हाइड्रोलिक रूप से परिचालित दो कन्डक्टिविटी, टेम्प्रेचर तथा डेप्त (सी टी डी) विन्च पोर्ट एवं स्टारबोर्ड भागों में प्रदान किए गए हैं. वाटर साम्प्लर और अन्य छोटे उपकरण पोर्ट और स्टारबोर्ड में लगाया जा सकता है. हाइड्रोलिक उपकरणों के चालन, नौचालन प्रकाश, वातानुकूलन, प्रकाश और अन्य सप्लाइ के लिए डीसल जेनरेटर लगाया गया है. आपात स्थिति में उपयोग करने के लिए एक अलग जेनरेटर भी स्थापित किया गया है.

जीवन रक्षक उपकरण और अग्नि नियंत्रक उपकरण (एल एस ए)(लाइफ रैफ्ट, स्वचालित इग्निशन लाइट युक्त बॉय और लाइफ लाइन एवं जैकट) भी स्थापित किए गए हैं. अग्नि रोधक उपकरण जैसे फायर एक्स्टिंग्विशर एवं हॉस प्रदान किए गए हैं. आनाय मत्स्यन और महासागरीय प्राचल और समुद्र से समुद्री नमूनों का संग्रहण करने के लिए पोत उपयुक्त किया जा सकता है. पोत में सी टी डी साम्प्लर, करन्ट मीटर, स्वचालित मौसम स्टेशन, क्लोरोफिल मापन के उपकरण, प्राणिप्लवक जाल और अवसाद साम्प्लर जैसे उपकरण प्रदान किए गए हैं. प्राथमिक विश्लेषण और आगे के परीक्षण के लिए नमूना नियत करने के लिए पोत में प्रयोगशाला सजायी गयी है. मछली नमूनों के परिरक्षण के लिए 400 लिटर की क्षमता युक्त एक वहनीय मछली स्टोरेज फ्रीसर लगाया गया है. मौसम स्टेशन में निस्किन जल नमूनों, सी टी डी प्रोब, वान वीन ग्राब और प्लवक जाल के लिए जगह प्रदान किया गया है.

(पी.यू.ज़क्करिया, अध्यक्ष, पोत प्रबंधन सेल, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची की रिपोर्ट)

एफ.वी.सिल्वर पोम्पानो

राष्ट्रीय समुद्री पखमछली ब्रूड बैंक का कमीशनिंग

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में भारत का पहला ब्रूड बैंक, पुन:परिसंचरण जलकृषि व्यवस्था और समुद्री संवर्धन समुच्चय

डॉ.एस.अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प द्वारा कमीशन किया गया

सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प डॉ. एस. अय्यप्पन द्वारा दिनांक 12 मई 2013 को भारत की पहली ब्रूड मछली बैंक सुविधा, पुनःपरिसंचरण जलकृषि व्यवस्था (आर ए एस) प्रयोगशाला और एक समुद्री संवर्धन समुच्चय का कमीशनिंग किया गया. नए अनुसंधान एवं प्रशासनिक ब्लोक और अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षणार्थी छात्रावास का उद्घाटन भी महानिदेशक द्वारा किया गया. कार्यक्रम में डॉ.बी. मीनाकुमारी, उप महानिदेशक (स.मा.), भा कृ अनु प, डॉ. मदन मोहन, सहायक महानिदेशक (मा.), भा कृ अनु प, श्री के. नन्दकुमार, आइ ए एस, जिलाधीश, रामनाथपुरम और कमान्डन्ट एच. एच. मोरे, कमान्डिंग अधिकारी, इंडियन कोस्ट गार्ड, मंडपम स्टेशन ने आशीर्वचन दिया.

महानिदेशक ब्रूड बैंक सुविधा का निरीक्षण करते हुए

महानिदेशक अंडशावक मछली का निरीक्षण करते हुए

उच्च मूल्य वाली पखमछलियों के प्रजनन और संतति उत्पादन के लिए अंडशावकों के विकास के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय समुद्री पखमछली ब्रूड बैंक का रूपायन और निर्माण किया गया. अंडशावक बैंक की अवधारणा का रूपायन, विकास एवं निर्माण मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में ही किया गया. लगातार जैवनिस्यंदन सुविधा वाले अंडशावक टैंक कोबिया, सिल्वर पोम्पानो, ग्रूपर, स्नापर, ब्रीम्स जैसे उच्च मूल्य वाली मछलियों का स्वस्थ स्थिति में अनुरक्षण करने के लिए उपयुक्त किए जा सकते हैं. सामान्यतः भूमि पर आधारित समुद्री पखमछली अंडशावक स्टॉक का अनुरक्षण ज्यादा खर्चीला, समय लगने वाला और श्रमयुक्त होने की वजह से निजी सेक्टर के उद्यमी लोग समुद्री संवर्धन क्षेत्र में आगे आने में विमुख होते हैं. इस दुविधा को मानते हुए सी एम एफ आर आइ वाणिज्यिक प्रमुख समुद्री पखमछलियों के अंडशावकों का विकास करके निजी स्फुटनशालाओं को उंगलिमीनों के उत्पादन के लिए गुणतायुक्त अंड / नए स्फुटित डिंभकों को प्रदान करने के उद्देश्य से सी एम एफ आर आइ ने मंडपम में एक राष्ट्रीय समुद्री मछली ब्रूड बैंक की स्थापना की. यह सुविधा भारत में उठाया गया पहला कदम है और महानिदेशक द्वारा इसका कमीशनिंग किया गया.

समुद्री पखमछली अंडशावकों के स्वास्थ्यपूर्वक अनुरक्षण और वर्ष भर प्रजनन के लिए ड्रम फिल्टर, फ्लूइडाइस्ट बेड बयोरियाक्टर, प्रोटीन स्किम्मर, यू वी स्टेरिलाइसर तथा अंड संभरण की सुविधा जैसे घटकों से युक्त पुनः परिसंचरण जलकृषि व्यवस्था आवश्यक है. ब्रूडस्टॉक मछलियों को अंडजनकों तक विकसित करने के लिए यह व्यवस्था सहायक

आर ए एस पर जिलाधीश, रामनाथपुरम शिलाफलक का अनावरण करने का दृश्य

महानिदेशक आर ए एस सुविधा का निरीक्षण करने का दृश्य

होगी. मछलियों की परिपक्वता त्वरित करने के लिए फोटो-थर्मल अनुकूलन सुविधा भी इसके साथ जोडी जा सकती है. इस सुविधा में अंडजनकों की सुरक्षा और वर्ष भर नियंत्रित अंडजनन सुनिश्चित किया जाता है. मेसेर्स अक्वाटिक एकोसिस्टम्स, यू एस ए से परिष्कृत उपकरणों का अयात करके मंडपम में आर ए एस सुविधा स्थापित की गयी है, जो भारत में पहली बार है.

येलोफिन ट्यूना जैसे बडी जाति मछलियों के अंडशावक विकास के लिए बडे पैमाने की अवसंरचना आवश्यक है. बडे पैमाने में

डॉ.मीनाकुमारी, डी डी जी द्वारा अनुसंधान एवं प्रशासनिक ब्लोक का उद्घाटन

अनुसंधान एवं प्रशासनिक ब्लोक का दृश्य

समुद्री संवर्धन समुच्चय में सहायक महानिदेशक (स.मा.) द्वारा शिलाफलक का अनावरण करने का दृश्य

महानिदेशक समुद्री संवर्धन समुच्चय का निरीक्षण करते हुए

उंगलिमीनों के पालन के लिए भी विस्तृत प्रकार की सुविधाएं आवश्यक है. इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र के पाक उपसागर के परिसर में भारी क्षमता वाले कंक्रीट के टैंकों (1250 टन क्षमता के 4 टैंक) से युक्त समुद्री संवर्धन समुच्चय का रूपायन और स्थापना किया गया. यह सुविधा अंडशावक विकास, पालन व्यवस्था और खेत में परीक्षण की प्रौद्योगिकियों के मानकीकरण में सहायक निकलेगी. माननीय महानिदेशक द्वारा यह समुच्चय राष्ट्र को सौंपा दिया गया.

इस के अतिरिक्त, वैज्ञानिकों, तकनीकी कार्मिकों और प्रशासनिक तथा लेखा अनुभागों के संचालन के लिए अनुसंधान एवं प्रशासनिक ब्लोक का भी निर्माण किया गया. इन सब के अलावा इस सुविधा में ड्राइ एवं वेट प्रयोगशालाएं भी सजायी गयी हैं.

केंद्र में विकसित की गयी विभिन्न प्रकार की प्रौद्योगिकियों पर तकनीकी जानकारी ग्रहण करने के लिए विदेशों से प्रतिनियुक्त किए जाने वाले प्रशिक्षणार्थियों को रहने के लिए 13 एकल कमराओं सहित अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षणार्थी होस्टल का निर्माण किया गया है जिसका उद्घाटन भी इस अवसर पर किया गया.

महानिदेशक ने सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र के परिसर में स्थापित और स्वयं सहायक संघों द्वारा चलाए जाने वाले लघु पैमाने के सजावटी मछली उत्पादन एकक का उद्घाटन किया.

महानिदेशक ने उद्घाटन भाषण प्रस्तुत किया और मछुआरों तथा उद्यमियों का अभिनन्दन भी किया.

महानिदेशक द्वारा शिलाफलक का अनावरण

प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम द्वारा अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षणार्थी होस्टल का उद्घाटन करते हुए

महानिदेशक द्वारा अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षणार्थी होस्टल के शिलाफलक का अनावरण

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में निर्मित अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षणार्थी होस्टल

उप महानिदेशक लघु पैमाने की स्फुटनशाला एकक का उद्घाटन करने का दृश्य

पालन किए गए महाचिंगटों के साथ महानिदेशक

पिंचरा समुद्री संवर्धन द्वारा गुजरात के *सिदि* जनजातियों का सशात्कीकरण सि एम एफ आर आइ द्वारा टी एस पी का फलन

वेरावल क्षेत्रीय केंद्र में दिनांक 13 अप्रैल 2013 को समुद्री पिंजरों में पालन किए गए उत्पादों और पिंजरे के सामानों को आदिम समुदाय 'सिदी' के लोगों को प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से उनको सौंपा दिया. सी एम एफ आर आइ द्वारा वेरावल में स्थापित समुद्री पिंजरे से मछली संग्रहण कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प, नई दिल्ली द्वारा किया गया. जनजाति समुदाय के लोगों की आजीविका में बढ़ोत्तरी लाने के उद्देश्य से जनजाति सहकारी संघ द्वारा वेरावल और जुनगढ़ जिला के तलाला के *सिदी* समुदाय के चुने गए कुल 20 कुटुम्बों के लिए संस्थान के वर्ष 2012-13 के ट्राइबल सब प्लान कार्यक्रम के अंदर सी एम एफ आर आइ द्वारा पिंजरा खेत की स्थापना की.

पालन के 110 दिनों बाद खेत से कुल 2.5 टन महाचिंगटों और 300 कि.ग्रा. कोबिया मछली का उत्पादन आकलित किया गया और इसे आकार के अनुसार प्रति किलोग्राम के लिए 1000 - 1200/- रुपए की दर में बेच दिया गया. पालन खेत में मौजूद 33 लाख रुपए के सामान और उत्पादों का प्रचलित बाजार मूल्य 26 लाख रुपए दिनांक 13 मई 2013 को महानिदेशक, भा कृ अनु प द्वारा 'सिदी' जनजाति के सदस्यों को सौंपा दिया गया. इस अवसर पर डॉ. एन.सी. पटेल, कुलपति, जे ए यु, जुनगढ़; श्री दरबार, आइ ए एस, मात्स्यिकी आयुक्त, गुजरात; डॉ. मदन मोहन, सहायक महानिदेशक (स.मा.); डॉ. टी.के. श्रीनिवास गोपाल, निदेशक, सी आइ एफ टी; डॉ. मिश्रा, निदेशक, डी जी आर, जुनगढ़ और कई किसानों, उद्यमियों, मछुआरों तथा मीडिया के लोग उपस्थित थे. जनजाति सदस्यों के नेता श्री हसिन भाय ने भा कृ अनु प के प्रति आभार प्रकट किया और यह व्यक्त किया कि उनकी आजीविका का उन्नयन करने के लिए पहली बार भा कृ अनु प जैसे सरकारी एजेन्सी ने सहायता प्रदान की. डॉ.एस. अय्यप्पन ने इस तरह प्रौद्योगिकी को जनजाति समुदाय के सामाजिक हित के लिए एकीकृत करने के लिए डॉ. जी. सैदा रावु, निदेशक और वेरावल के कार्मिकों का अभिनन्दन किया और भा कृ अनु प के अन्य संस्थानों द्वारा इस तरह की पहल प्रारंभित करने की प्रत्याशा प्रकट की. हारवेस्ट कार्यक्रम के अवसर पर डॉ. एस. अय्यप्पन ने सी एम एफ आर आइ द्वारा प्रकाशित भारत की समुद्री झींगा विषयक हैंडबुक का विमोचन किया.

आदिम जनजाति समुदाय के लोगों की आजीविका बढाने के लिए ही नहीं, बल्कि

वेरावल में समुद्री पिंजरों में वजन बढ़ाए गए केकड़ों का दृश्य

विशिष्ट व्यक्तियों के साथ हिताधिकारी कुटुम्ब

उनको इस आशाजनक प्रौद्योगिकी के संरक्षक बनाने और तद्वारा जलवायु परिवर्तन के प्रति सुभेद्य तटीय क्षेत्रों और दुर्बल होने वाली मछली पकड़ की दृष्टि से किए गए सी एम एफ आर आइ के इस प्रयास को एक नवीनतम पहल के रूप में अभिनन्दन किया जाता है. जनजाति समुदाय के सदस्य पहले सीमांत श्रमिक थे और उनको प्रतिदिन 150/- रुपए से कम आमदनी मिल रही थी. लेकिन अब 115 दिनों के फसल की अवधि के दौरान वे प्रतिदिन 810/- रुपए कमाते हैं और इसके अलावा अगले फसल काल के दौरान लगातार मछली पालन के लिए उन्हें पिंजरे का पूरा सामान भी एक संपत्ति के रूप में प्राप्त हुआ है. जनजाति समुदाय के सदस्यों को पिंजरे के निर्माण से लेकर उच्चतम उत्पादन की प्राप्ति तक पिंजरा मछली पालन के सभी पहलुओं पर प्रशिक्षण देने के बाद उन में स्वयं यह करने की क्षमता आयी. सी एम एफ आर आइ की पहल उनके समाज-आर्थिक स्तर में प्रगति लाते हुए दीर्घकाल जारी की जाएगी.

खुला सागर पिंजरा मछली पालन के प्रमुख मामलों पर अनुसंधान करने योग्य धरातल होने के अतिरिक्त राज्य के विभिन्न तटीय जिलाओं के मछुआरों जैसे अन्य पणधारियों, राज्य मात्स्यिकी विभाग के कार्मिकों और समुद्र विज्ञान के छात्रों, गैर सरकारी संगठनों के कार्मिकों, इस क्षेत्र के कार्पोरेट निकायों के सी एस आर टीम को प्रशिक्षण देने के लिए सहायक होता है और इस पिंजरा खेत की ओर गुजरात राज्य के मात्स्यिकी क्षेत्र का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है.

यह सफलता इस वर्ष संस्थान द्वारा विकसित समुद्री पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकी की सफलता का उत्कृष्ट उदाहरण और लगभग 1600 कि.मी. की विस्तृत तटरेखा से युक्त गुजरात राज्य की, मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए खुला सागर समुद्री मछली पालन विकसित करने की शक्यता का दृष्टांत है.

(वेरावल क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

संग्रहण मेले के दौरान महानिदेशक के निर्देश पर सभी मात्स्यिकी प्रबंधक और भा कृ अनु प के वैज्ञानिक गण मछुआरों के साथ

महानिदेशक संग्रहित केकडों को लेते हुए

सोमनाथ के वेरावल समुद्र में समुद्री पिंजरों का दृश्य

कोच्ची में "एस ए ए आर सी क्षेत्र में जलकृषि के अच्छे व्यवहार और सीखे गए पाठ" विषय पर सी एम एफ आर आइ - एस ए ए आर सी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला

सी एम एफ आर आइ सभागृह में 5 जून 2013 को कार्यशाला का उद्घाटन और 7 जून 2013 को समापन हुआ. डॉ.आर.पोल राज, सदस्य सचिव, तटीय जलकृषि प्राधिकरण, चेन्नई ने कार्यशाला का उद्घाटन किया. उन्होंने मछली 'सस्ता प्रोटीन' से महंगा प्रोटीन होने के परिवेश में जलकृषि उत्पादन की प्रासंगिकता पर ज़ोर दिया. वर्तमान व्यवहारों में बेहत्तर जलकृषि व्यवहार की आवश्यकता है और तटीय जलकृषि कार्यक्रमों में विविध प्रकार के विधि के मामले है. उन्होंने साउथ एशियन असोसिएशन फोर रीजियनल कोओपरेशन (एस ए ए आर सी) देशों से, इस क्षेत्र के जलकृषि व्यवहारों से सीखे गए पाठों के लिए उचित समाधानों का अनुसरण करने का आह्वान किया. डॉ.दिलीप कुमार, भूतपूर्व निदेशक, केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान (सी आइ एफ ई) मुख्य अतिथि थे और उन्होंने एस ए ए आर सी देशों के बीच इस क्षेत्र में सामना की गयी समान समस्याओं और इन के समाधान के लिए उपलब्ध संपदाओं पर विवरण करके इस दिशा में अपने अनुभवों को बांट दिया. डॉ. जी. सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने अपने अध्यक्षीय भाषण में, समुद्री संवर्धन की समस्याओं का समाधान करने में सी एम एफ आर आइ का सामर्थ्य व्यक्त किया और संस्थान की विजय कहानियाँ

डॉ. एस.के.मांगैन

डॉ.दिलीप कुमार

डॉ.जे.आर.भट्ट

बतायी. इस से वास्तव में एस ए ए आर सी क्षेत्र में सामना की जाने वाली समस्याओं का समन्वय करने के लिए सी एम एफ आर आइ को चुना गया.

डॉ.एस.के.मांगैन, उप निदेशक, एस ए ए आर सी तटीय मेखला प्रबंधन केंद्र (सी इज़ेड एम सी), मालिद्वीप, डॉ.जे.आर.भट्ट, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय का परामर्शक, डॉ.जे.के.जेना, निदेशक, राष्ट्रीय मछली आनुवंशिक संपदा (एन बी एफ जी आर) और डॉ.पी.जयशंकर, निदेशक, केंद्रीय मीठाजल जलकृषि संस्थान (सी आइ एफ ए) ने आशीर्वचन दिए. एस ए ए आर सी केंद्र, मालिद्वीप, भूटान, नेपाल, बंगलादेश और श्रीलंका के प्रतिनिधि गण और केंद्रीय मीठाजल जलकृषि (सी आइ बी ए), सी एम एफ आर आइ, एन बी एफ जी आर, जलकृषि के उद्यमियों और भारत के अन्य प्रतिनिधियों ने विचार विमर्श में भाग लिया. सी एम एफ आर आइ, कोचीन में दिनांक 05 और 06 जून को आयोजित जलकृषि में विकासः देश स्तर रिपोर्ट, विशेष परिवीक्षा/ बी एम पी पर मामला अध्ययन/ सीखे गए पाठ और जलकृषि के व्यवहारों के मुख्य मुद्दों पर विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा करीब सोलह लेखों का प्रस्तुतीकरण किया गया. इस अवसर पर एस ए ए आर सी के नामांकित व्यक्तियों ने मात्स्यिकी के इस पमुख राष्ट्रीय संस्थान का मुआइना करने और यहाँ कार्यरत भारत के ही विशिष्ट वैज्ञानिकों, जिनकी पुस्तकें उन्होंने अपने अध्ययन काल और नौकरी काल में पढी हैं, से बातचीत करने का अवसर मिलने के लिए संतोष प्रकट किया. प्रतिनिधियों को दिनांक 07 जून को परवूर में स्थापित सी एम एफ आर आइ के पिंजरा खेत, वेस्ट कोस्ट मराइन ओर्नमेन्टल फिश हैचरी, अंधकारनषी और आलप्पुषा जिला के मीठाजल सजावटी मछली स्फुटनशाला एवं खेत दिखाए गए. यह कार्यशाला सी एम एफ आर आइ और भा कृ अनु प के अन्य मात्स्यिकी संस्थानों की उपलब्धियाँ एस ए ए आर सी देशों को प्रदर्शित करने का मार्ग बन गया.

डॉ.जे.के.जेन

डॉ.पी.जयशंकर

मात्स्यिकी विज्ञान के क्षेत्र में वर्ष 1954 से लेकर प्रमुख इंडियन जर्नल

ISSN 0970-6011

वार्षिक चंदा
रु.1000 $ 100
निदेशक, सी एम एफ आर आइ
कोच्ची - 682 018 से संपर्क करें

इन्टरनाशनल इंपैक्ट फैक्टर 0.04
एन ए ए एस रेटिंग 6.2

भागीदारों का दृश्य

भागीदार पिंजरा मधली पालन देखत् हुए

डॉ. जी. सैदा रावु ओर संकाय सदस्यों के साथ सहभागीयों का दृश्य

एन आइ सी आर ए के प्रौद्योगिकी निदर्शन घटक के अंदर कोबिया मछली के प्रथम संग्रहण

महानिदेशक, भा कृ अनु प संग्रहित कोबिया मछली को उठाते हुए

एन आइ सी आर ए द्वारा सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र के सहयोग से दो स्वयं सहायक संघों ने दिनांक 29 सितंबर, 2012 को मंडपम समुद्र में कोबिया मछली के पिंजरा पालन के सहभागी प्रौद्योगिकी निदर्शन का प्रारंभ किया गया. जी आइ लोहे से निर्मित 7 मी. के व्यास और 3.5 मी. की गहराई के वृत्ताकार के चार पिंजरों में मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की स्फुटनशाला में उत्पादित कोबिया मछली के 1800 संततियों को संभरित किया गया. उंगलिमीनों के प्रारंभिक लंबाई और भार का परास क्रमशः 10 से 15 से.मी. तथा 20 से 30 ग्रा. था. संभरण की सघनता 4.1/मी^{3} थी. इन मछलियों को खाने के लिए दिन में दो बार यथेष्ट कचरा मछली दी गयी. लगभग 7 महीनों की पालन अवधि के दौरान ये मछली लगभग 2.0 से 3.5 कि.ग्रा. के आकार परास और 2.5 कि.ग्रा. के औसत भार तक बढ़ गयीं. खाद्य परिवर्तन दर 5.9 आकलित किया गया.

स्वयं सहायक संघों द्वारा पालन की गयी कोबिया मछली का संग्रहण कार्य दिनांक 12 मई 2013 को माननीय महानिदेशक द्वारा किया गया. कुल 4 टन कोबिया मछली का उत्पादन किया गया और इन्हें प्रति किलोग्राम के लिए 250/- रुपए का फार्म गेट मूल्य प्राप्त हुआ. प्रति किलोग्राम मछली की उत्पादन लागत 134/- रु. आकलित की गयी और 4,65,976/- रुपए का सकल आय प्राप्त हुआ.

कोबिया मछली के संग्रहण का दृश्य

एस एच जी के सदस्य और वैज्ञानिक गण संग्रहित मछलियों के साथ

संग्रहित कोबिया मछलियों का दृश्य

सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में कोबिया मछली के ऐच्छिक अंडजनन में सफलता

3वां डी पी एच कोबिया डिंभक

कोबिया डिंभक पालन

कोबिया डिंभकों का अशन

कोबिया डिंभक

कोबिया के दो सेट अंडशावकों, जिन में एक मादा और दो नर हैं और मंडपम क्षेत्रीय केंद्र के राष्ट्रीय समुद्री मछली ब्रूड बैंक सुविधा में इनका अनुरक्षण किया जा रहा था, ने मई, 2013 के दौरान किसी भी होर्मोन प्रेरणा के बिना अंडजनन किया. पानी की गुणता का प्राचल देशज निस्यंदन सुविधा से युक्त उच्चतम मानक तक कायम रखा गया. अंडशावकों को खाने के लिए स्क्विड और केकडे दिए गए. कुल 2.5 मिलियन निषेचित अंड थे और 85% अंडों का स्फुटन हुआ. डिंभक पालन प्रगति पर है.

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में सिल्वर पोम्पानो का संतति उत्पादन

मंडपम में अप्रैल से मई 2013 के दौरान सिल्वर पोम्पानो *ट्रकिनोटस ब्लोची* का तीन बार अंडजनन किया गया. कुल 5.5 मिलियन निषेचित अंड थे और 85% अंडों का स्फुटन हुआ. डिंभक पालन प्रगति पर है.

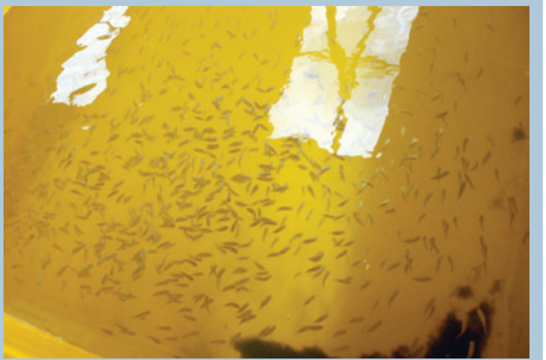

पोम्पानो का डिंभक पालन

पोम्पानो उंगलिमीन

पोम्पानो डिंभकों का अशन

महानिदेशक पोम्पानो डिंभकों का निरीक्षण करते हुए

मांगलूर के उप्पुन्डा में मछली संग्रहण मेला

सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केंद्र द्वारा दिनांक 28.05.2013 को उप्पुन्डा गाँव में पखमछलियों की संग्रहण मेला आयोजित की गयी. श्री गोपाल पुजारी, बिन्डूर विधान सभा सदस्य ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया. उप्पुन्डा ग्राम पंचायत के अध्यक्ष श्री जगन्नाथ कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे. श्री वी.के. शेट्टी, प्रबंध निदेशक, के एफ डी सी, मांगलूर, डॉ. के.के.फिलिप्पोस, प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र, श्री सुरेश कुमार, मात्स्यिकी उप निदेशक और पी एल डी बैंक तथा किसान सहकारी बैंक के अध्यक्षों ने कार्यक्रम में भाग लिया. उप्पुन्डा गाँव के और गाँव के बाहर से मछुआरों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया. इसी दिवस पालन की गयी कुल मछलियों में से एक हिस्से का संग्रहण किया गया.

कुल तीन पिंजरों (4 x 2 x 2 मी. क्षेत्र) की मछलियों का संग्रहण एक हफ्ते की अवधि के दौरान किया गया.

लगभग 1200 कि.ग्रा. समुद्री बास और 100 कि.ग्रा. रेडस्नाप्पर मछलियों, जिनका भार क्रमशः 1.5 से 2.0 कि.ग्रा. था, का संग्रहण किया गया. करीब एक वर्ष तक इन मछलियों का पालन किया गया. सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केंद्र, मांगलूर द्वारा निदर्शन कार्य आयोजित किया गया और केंद्र ने पालन कार्य के लिए मछुआरों को पिंजरे, मछली संतति और प्रौद्योगिकी सूचनाएं प्रदान की. इस बार मत्स्यन रोध चालू होने के कारण संग्रहण की गयी मछलियों को प्रति किलोग्राम के लिए 340/- रुपए का स्थानीय मूल्य प्राप्त हुआ. उप्पुन्डा और अलिवेकोडी में 13 पिंजरों में पालन की गयी समुद्री बास और रेडस्नाप्पेर्स मछलियों का संग्रहण भी अप्रैल और मई महीनों के दौरान किया गया.

श्री गोपाल पुजारी, बिन्डूर विधान सभा सदस्य संग्रहण मेले का उद्घाटन करते हुए

श्री गोपाल पूजारी, बिन्डूर विधान सभा सदस्य संग्रहित मछलियों के साथ

संग्रहित मछलियों के साथ मछुआरे

संग्रहित मछलियों का दृश्य

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में "ग्रूपर" मछली जाती के प्रजनन और डिंभक पालन में सफलता एक और उपलब्धि

ग्रीसी ग्रूपर *एपिनेफेलस टॉविना* भारत की सबसे प्रमुख समुद्री मछली जाति है और प्रग्रहण मात्स्यिकी में इस मछली को पर्याप्त मात्रा में नहीं पायी जाती है. यह तेज बढ़ने वाली ग्रूपर जाति है और इस का अच्छा बाज़ार भाव भी मिलता है. मछुआरों को पिंजरों और तालाबों में पालन करने के लिए विभिन्न लवणता परास का सहन करने वाली इस मछली जाति के संतति आवश्यक है. प्रारंभिक पालन स्तर के बाद 9 महीनों में यह एक किलोग्राम तक बढ़ जाती है. घरेलू बाज़ार में इस मछली के लिए 200/- रुपए का भाव मिलता है.

सी एम एफ आर आइ ने लगभग दो दशकों से पहले इस चुनौतिपूर्ण प्रयास का प्रारंभ किया है. फिर भी, सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में विकसित प्रयोगशाला सुविधाओं में प्रेरित प्रजनन और संतति उत्पादन प्रौद्योगिकी विकसित की गयी. अब सहभागिता आधार पर इस मछली के संततियों को पिंजरों और तालाबों में बढ़ाए जाने की व्यवस्था की जा रही है. पालन के लिए प्राकृतिक स्थानों से उचित समय पर पर्याप्त मात्रा में संतति मछलियों की अनुपलब्धता ग्रूपर मछलियों के पालन की सबसे बडी समस्या है. सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में, प्राकृतिक स्थानों से विभिन्न आकार (2.0 से 10.0 कि. ग्रा. तक) की जीवंत ग्रूपर मछलियों का संग्रहण करके समुद्र तट के पास स्थापित पिंजरे में स्टॉक किया गया. ग्रूपर मछली स्त्रीपूर्वी होने की वजह से स्टॉक की गयी सारी मछलियाँ मादा थीं. होर्मोन और एन्ज़ाइमों से प्रेरित करके लिंग परिवर्तन (मादा से नर) सफल रूप से किया जा सका. मछलियों को विभिन्न खुराकों में एन्ज़ाइम लगाया गया. लगभग <450μ के व्यास के अंतरंडाशयी अंड से युक्त मादा मछली और लिंगपरिवर्तन किए गए नर मछली को प्रेरित अंडजनन के लिए उपयुक्त किया गया. निषेचन के 19 - 20 घंटों के बाद 78% की निषेचन दर और 28 - 30°C के तपापमान परास में अंडों का निषेचन हुआ. नए स्फुटित डिंभक 1.0 - 1.4 मि.मी. की लंबाई के थे. निषेचन के 60 घंटों बाद मुँह खोला गया. निषेचन के 15 दिनों बाद आर्टीमिया नोप्ली, कोपीपोड और कृत्रिम खाद्य से युक्त मिश्रित खाद्य देना शुरू किया गया. लगभग 44 दिनों के बाद कायांतरण होकर 5-6 से.मी. की लंबाई के उंगलिमीन बन गए. यह सफलता देश में, पिंजरों और पालन तालाबों में की जाने वाली ग्रूपर जलकृषि प्रोत्साहित करने में सहायक निकलेगी. भारत में पहली बार सफल रूप से ग्रीसी ग्रूपर का डिंभक पालन किया गया.

(विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

पिंजरे में अनुरक्षण करने वाले ग्रूपर अंडशावक

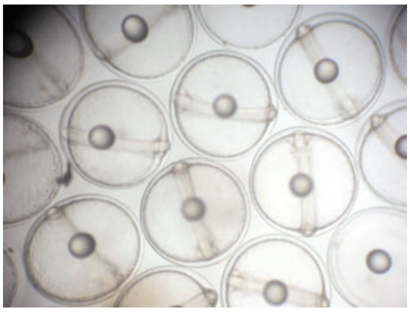

निषेचित अंड

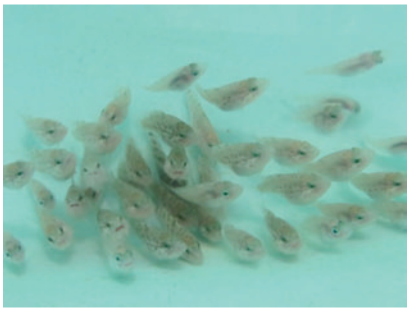

डी पी एच 1 पर ग्रीसी ग्रूपर के डिंभक

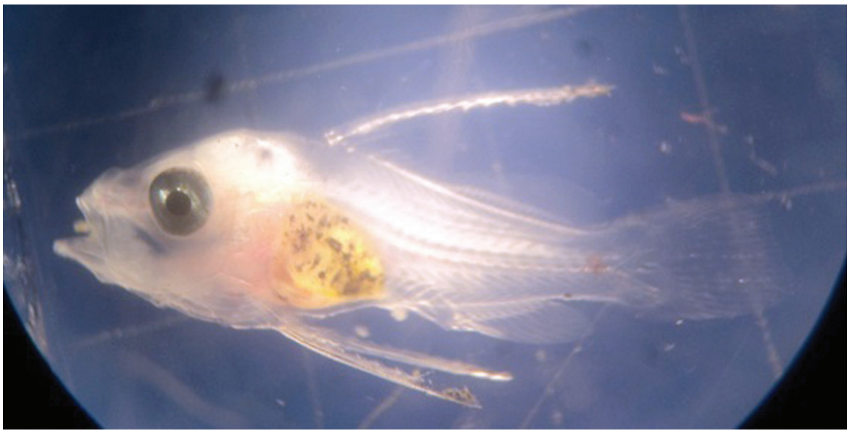

ग्रीसी ग्रूपर का 12 दिन की आयु की लोंग स्पिन अवस्था

डी पी एच 23 पर ग्रीसी ग्रूपर के डिंभक फ्री स्विम्मिंग अवस्था (I)

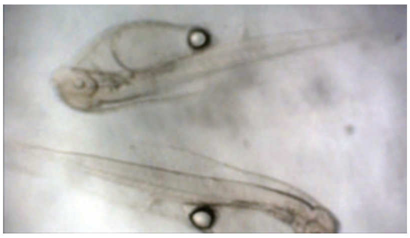

स्फुटनशाला के टैंक में ग्रीसी ग्रूपर के डिंभकों का दृश्य (I)

कर्नाटक के माल्पे पोताश्रय में बडे दांतों वाली सॉफिश की पकड़

कर्नाटक के माल्पे पोताश्रय में आनाय जालों के परिचालन के दौरान आकस्मिक पकड़ में उपास्थिमीनों के प्रिस्टिडे कुटुम्ब की बडे दांतों वाली आरा मछली *प्रिस्टिस माइक्रोडोन* को पकड़ा गया. मछली का भार लगभग 800 कि.ग्रा. था. इस मछली को आइ यू सी एन सूची और वन एवं पर्यावरण मंत्रालय की लाल सूची में जोडा गया है. साधारणतया जाल खराब करने और अपशकुन मानकर कर्नाटक के मछुआरे आरा मछली को नहीं पकडते हैं.

(मांगलूर अनुसंधान केंद्र)

प्रिस्टिस माइक्रोडोन की आकस्मिक पकड़

गुजरात के माधवाड पोताश्रय में किशोर तिमि सुरा *रिंकोडोन टाइपस* स्मिथ, 1828 की पकड़

कोडिनार के लगभग 100 मीटर की दूरी में माधवाड पोताश्रय में 30 फीट की लंबाई के एक किशोर तिमि सुरा (*रिंकोडोन टाइपस*) को मृत अवस्था में देखा गया. दिनांक 29 अप्रैल, 2013 को परिचालित बहुदिवसीय आनायक द्वारा इसे पकडा गया. राज्य मात्स्यिकी विभाग की सहायता से पशु चिकित्सा डॉक्टर द्वारा इस नमूने को काटकर अनुवीक्षण करने पर यह देखा गया कि इस में जिगर, पख के कुछ भाग और अन्य कुछ भाग नहीं थे. इस सुरा मछली के बारे में पहले मछुआरों को और राज्य मात्स्यिकी अधिकारी को सूचना दी गयी. प्राकृतिक क्लब का अध्यक्ष दिनेश गोस्वामि और उनके टीम, आर. एफ. ओ., ए. सी. एफ. भारवाड, रमेशभायी और कर्मचारियों को भी आवश्यक कार्रवाई के लिए सूचित किया गया. तिमि सुरा (*रिंकोडोन टाइपस*) सर्वदेशीय उष्णकटिबंधीय और गरम समशीतोष्ण जाति है और यह सब से बडा जीवित कोन्ड्रिक्तियोन है. यह मछली प्रवास स्वभाव की है और इसके जीवनवृत्त पर कम जानकारी मौजूद है. दक्षिण पूर्व एशिया में हारपून मात्स्यिकी और अन्य मात्स्यिकी द्वारा इस मछली जाति की जीवसंख्या में कमी दिखायी पडी है. भारत (वर्ष 2001 में तिमि सुरा मत्स्यन पर रोध लगाया गया), पाकिस्तान, तायवान (चीन का प्रोविन्स), फिलिप्पीन्स (वर्ष 1998 में रोध) और मालिद्वीप (वर्ष 1995 में संरक्षण से पहले) सहित विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में लघु पैमाने की हारपून मात्स्यिकी और उलझन मात्स्यिकी चालू है.

गुजरात के माधवाड पोताश्रय में पकडे गए तिमि सुरा का पृष्ठ-पार्श्व दृश्य

अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में इस मछली की बढ़ती मांग है और साधारणतया कम प्रचुरता से वाणिज्यिक मात्स्यिकी में इस मछली जाति की सुभेद्यता व्यक्त होती है.

(स्वातिप्रियंका सेन दास और कमालिया किरण आर., सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

गुजरात से प्राप्त अरेबियन कारपेट शार्क, में अंड संपुट की उपस्थिति

मांग्रोल में दिनांक 18.04.2013 को किए गए आनाय अवतरण में लगभग 52.5 से.मी. (कुल लंबाई) और 405 ग्राम के भार वाले *सी. अरबिकम* (चित्र 1) के एक मादा नमूना प्राप्त हुआ. अंडप्रजनक जाति होने के कारण इस के गर्भाशय में संलग्नक कोर युक्त अंड संपुट (चित्र 2) दिखाए पडे. गर्भाशय बहुत पतला देखा गया. कैराटीनी अंड संपुट अधिकाधिक आयताकार, दोनों के चौडे भाग उत्तल और तीखे भूरे रंग और अंडयुक्त थे. हर एक गर्भाशय में केवल एक अंड संपुट मौजूद था.

अंड संपुटों से युक्त *सी.अरबिकम*

अंड संपुट में सफेद रंग का चिपचिपा द्रव देखा गया. अंड देने के बाद लवण जल से अंड संपुट दृढ़ होकर सुरक्षित बाहरी कवच बन जाता है. इस कवच के अंदर योक होता है, जो डिंभक के विकास के लिए आवश्यक आहार देता है. निषेचन के 70 से 80 दिनों बाद अरेबिययन कारपेट शार्क के अंडों का स्फुटन होता है.

(स्वातिप्रियंका सेन दास, संगीता ए., भारदीया, एम.एस. ज़ाला और कमालिया किरण आर., सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

अंड संपुटों का दृश्य

गुजरात के द्वारका से छोटे पख वाले मको, *इस्यूरस ओक्सीरिंकस* (रफिनेस्क, 1810) की उपस्थिति

गुजरात के द्वारका से प्राप्त *इस्यूरस ओक्सीरिंकस* (रफिनेस्क, 1810)

वेरावल मत्स्यन पोताश्रय में दिनांक 18 मार्च, 2013 को इस जाति के एकल नर नमूने का अवतरण और संग्रहण किया गया. वेरावल से ओखा तक परिचालित बहुदिवसीय गिल जाल आनायक (ओ ए एल 52 फीट) द्वारा इस नमूने को पकडा गया. मछुआरों द्वारा दी गयी सूचना और मत्स्यन तल के जी पी एस स्थान (21°55' 26''N , 68°11' 42''E) से यह संकेत मिला कि द्वारका के समुद्र में लगभग 104 मी. की गहराई से सुबह 11 घंटे को इस मछली को पकडा गया. गिल जाल की जालाक्षि का आकार 120 मि.मी. था. मछुआरों ने इसे ''डोलफिन शार्क'' बुलाया. इस नमूने को प्रयोगशाला में लाकर फोटोग्राफ खींचा गया और इस की पहचान का स्पष्टीकरण कोम्पाग्नो,1984 के अनुसार किया गया. आकारमिति के विवरण का उल्लेख करने के बाद सुरे को काटकर जीववैज्ञानिक आकलन किया गया.

(स्वातिप्रियंका सेन दास, संगीता ए., भारदीया, एम.एस. ज़ाला और कमालिया किरण आर., सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

अष्टमुडी झील में येलो फुट सीपी के निर्मलीकरण और संसाधन प्रगति पर

कोइलोन समाज सेवा संघ (क्यू एस एस एस) ने उच्च मूल्य की कवच मछली पर एन ए आइ पी योजना के अंदर अष्टमुडी झील में येलो फुट सीपी (*पाफिया मलबारिका*) के संसाधन के लिए शुक्ति निर्मलीकरण और संसाधन प्रौद्योगिकी स्वीकार की.

येलो फिन सीपी के गुणता सुनिश्चित उत्पादों का निर्माण करके कोइलोन समाज सेवा संघ (क्यू एस एस एस) ने घरेलू बाज़ार में सीपी उत्पादों की लोकप्रियता बढ़ाने के प्रयास में शुरुआत की. निर्मलीकृत सीपियों से मांस का छिलका उतारने के लिए तीन मिनट भाप का दबाव देना पडता है. इस कार्य के लिए सी एम एफ आर आइ के मोलस्क मात्स्यिकी प्रभाग और एन आइ एफ पी एच ए टी टी द्वारा तकनीकी और वैज्ञानिक सहायता प्रदान की. संघ ने 14 जून 2013 को ''अष्टमुडी'' विपणन नाम के अंदर उत्पाद का लॉंचिंग किया. माननीय मात्स्यिकी मंत्री श्री के. बाबु ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और माननीय श्रम मंत्री श्री शिबु बेबी जोन अध्यक्ष रहे. श्री एन. पीतांबर कुरुप्प, माननीय लोक सभा सदस्य, कोल्लम द्वारा पकाने के लिए तैयार येलो फुट सीपी मांस का पैकेट श्रीमती बीना दयाल, तेक्कुमभागम ग्राम पंचायत को देते हुए पहला विपणन किया गया. माननीय मंत्री श्री के. बाबु ने ''समृद्धि'' नामक कवचमछली मूल्य वर्धित उत्पादन एकक का उद्घाटन किया और उन्होंने इस एकक की कार्यविधियाँ देखने में विशेष ध्यान दिया.

श्री षिबु बेबी जोन, मंत्री अध्यक्षीय भाषण देते हुए

नए निर्मित वी ए पी एकक में निर्मलीकरण और भाप से छिलका उतारने के बाद येलो सीपी कवचों का संसाधन करते हुए

नए तरीके से संसाधन किया हुआ येलो फुट सीपी मांस

उत्तर वेम्बनाड्डु झील में शुक्ति संग्रहण

मूत्तकुन्नम और पुत्तनवेलिक्करा में एन ए आइ पी योजना के अंदर पालन की गयी शुक्तियों का बंपर संग्रहण किया गया. एक फार्म में 300 रस्सियाँ युक्त कुल 15 फार्मों में मई 2013 महीने में संग्रहण किया गया. रस्सी में पूरी तरह बढ़ गयी सीपियों का भार एक वर्ष में लगभग 10 कि.ग्रा. है और एक रस्सी से करीब 400 ग्रा. से 500 ग्रा. मांस प्राप्त होता है. निर्मलीकरण, भपन और द्रुत हिमशीतीकरण किया हुआ, शुक्ति मांस कोच्ची, फोरशेर रोड में स्थित एन आइ एफ पी एच ए टी टी के काउन्टर द्वारा बेच दिया गया.

अष्टमुडी झील में येलो फुट सीपी (*पाफिया मलबारिका*) पालन एम एस सी द्वारा निर्धारण और एकोलेबलिंग

डब्लियू डब्लियू एफ के प्राकृतिक प्रग्रहण मात्स्यिकी प्रामाणीकरण योजना के अंदर सी एम एफ आर आइ के मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग की सहायता से मराइन स्टिवार्डशिप काउन्सिल (एम एस सी) ने अष्टमुडी झील में सर्वेक्षण आयोजित किया. मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग द्वारा तैयार की गयी ''अष्टमुडी झील सीपी संपदा सर्वेक्षण'' के आधार पर एम एस सी ने अष्टमुडी झील की येलो फुट सीपी मात्स्यिकी टिकाऊ घोषित करने की प्रक्रिया का अंतिम रूप दिया है. एक वर्ष के अंदर येलो फुट सीपी को एम एस सी एकोलेबल मिल जाएगा.

(मोलस्क मात्सिकी प्राभाग की रिपोर्ट)

जनगणना 2015-पूर्व कार्यशाला

Workshop in progress

सी एम एफ आर आइ, कोचीन में डी ए एच डी एफ, कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली की सहकारिता से 28 मई 2013 को समुद्री मात्स्यिकी जन-गणना 2015 के लिए एक दिवसीय जनगणना-पूर्व कार्यशाला आयोजित की गयी. डॉ.जी.सैदा राव, निदेशक, सी एम एफ आर आइ, श्री ओ. पी.मिश्रा, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), डी ए एच डी एफ, डॉ.विजयकुमारन, महानिदेशक, भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, सी एम एफ आर आइ, डी ए एच डी एफ, एफ एस आइ और राज्य मात्स्यिकी विभाग के कार्मिकों ने कार्यशाला में भाग लिया. पिछली जनगणना के दौरान उठ गयी विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की गयी और इनका समाधान भी सुझाया गया. समुद्री मात्स्यिकी जनगणना 2010 में उपयुक्त की गयी विभिन्न आंकडा संग्रहण अनुसूचियों का निदर्श करके इन पर चर्चा की गयी और भागीदारों द्वारा सुझाए गए परिवर्तन भी जोडे गए.

सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 29-30 अप्रैल 2013 के दौरान एन एफ डी बी निधिबद्ध परियोजना "मात्स्यिकी के लिए डिजिटल ज्ञान प्रबंधन धरातल का विकास - फिशपीडिया" के अंदर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी. आइ सी आर आइ एस ए टी की अध्यक्षता और डॉ.एन.टी.यदुराजु, जो परियोजना का प्रधान अन्वेषक है, के नेतृत्व में परियोजना चलायी गयी और भा कृ अनु प के सभी मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान परियोजना के सहभागी हैं. सहभागी संस्थानों को फिशपीडिया परियोजना के बारे में सुग्राही बनाने और भागीदारों को ज्ञान प्रतिरूपों और सी-मैप टूल्स पर प्रशिक्षण देने के लिए कार्यशाला आयोजित की गयी. डॉ.जी. सैदा राव, निदेशक, सी एम एफ आर आइ कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे और परियोजना के विभिन्न सहभागी संस्थानों के कार्मिकों ने कार्यशाला में भाग लिया.

सी एम एफ आर आइ पुरस्कृत अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान परियोजना - बेलमोन्ट फोरम और जी 8 अनुसंधान परिषद की पहल

बेलमोन्ट फोरम और जी 8 अनुसंधान परिषद अंतर्राष्ट्रीय अवसर निधि से अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान परियोजना पहल के अंदर तटीय सुभेद्यता विषय पर "स्थानीय सुधार के लिए भौगोलिक अध्ययनः समुद्र पर निर्भर तटीय समुदायों की सुभेद्यता घटाना" विषय पर सी एम एफ आर आइ की परियोजना की मंजूरी प्राप्त हुई है. परियोजना के लिए प्रस्तुत कुल 50 प्रस्तावों में से पुनरीक्षण एजेन्सी - प्राकृतिक पर्यावरण अनुसंधान परिषद, युनाइटड किंगडम द्वारा केवल सात परियोजनाओं को पुरस्कृत किया गया.

कन्सोर्शियम के साथीः

संगठन	देश
रोडस विश्वविद्यालय, ग्रहामस्टौन	दक्षिण आफ्रिका
केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन	भारत
सी एस आइ आर ओ समुद्री एवं अंतरिक्ष अनुसंधान, होबर्ट	आस्ट्रेलिया
सॉओ पॉलो विश्वविद्यालय, सॉओ पॉलो	ब्रज़ील
राष्ट्रीय महासागर केंद्र, साउथआम्टन	युनाइटड किंगडम
कालिफोर्निया सान्टा क्रूस विश्वविद्यालय, सान्टा क्रूस	युनाइटड स्टेट्स
सेरवीस डि अप्पुई ए ले जेस्टन डि एल एनवयोर्नमेन्ट (एस ए जी ई - फाम्पान्ड्रोसोअनामहारित्रा)	मडगास्कर
ओटागो विश्वविद्यालय, डुनेडिन	न्यूज़िलान्ड
विक्टोरिया विश्वविद्यालय, विक्टोरिया	कनडा
एड्वार्डो मोन्डलेन विश्वविद्यालय, मापुटो	मोज़ाम्बिक
अबेरिस्ट्विथ विश्वविद्यालय, अबेरिस्ट्विथ	युनाइटड किंगडम
साउथआम्टन विश्वविद्यालय, साउथआम्टन	युनाइटड किंगडम

परियोजना टीम में 12 अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों से कुल 40 वैज्ञानिक सम्मिलित है. परियोजना अक्तूबर, 2013 से लेकर तीन वर्षों तक चालू होगी. तटीय सुभेद्यता होने वाले क्षेत्रों में बेलमोन्ट चुनौतियों विशेषतः भौगोलिक तापन और तटीय मानव जनसंख्या बढ़ती के परिणाम से होने वाली खाद्य सुरक्षा और आजीविका के टिकाऊपन से संबंधित चुनौतियों पर इस परियोजना में संबोधन किया जाएगा. परियोजना में तटीय समुद्री खाद्य संपदाओं के विशेषण, निर्धारण और पूर्वानुमान और अनुयोज्य अनुकूलन विकल्पों की पहचान करते हुए सामुदायिक अनुकूलन के सुधार में योगदान की जाएगी. परियोजना के समग्र उद्देश्य प्रत्याशित संघातों के मूल्यांकन और विशेषताओं के विवरण से तटीय सुभेद्यता कम करने के लिए पर्याप्त कुशलता विकसित करना, पूर्वानुमान की व्यवस्थाएं विकसित करना जिन से तटीय परिवर्तनों के परिणामों पर निर्णायकों को सूचना मिल जाएगी, तटीय समुदायों में अनुकूलन और परिवर्तनों के विकल्प उपायों पर सुझाव देना और आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टि से विशेष प्रकार के विकल्प का चयन करने पर होने वाले दीर्घकालीन उलझनों का विवरण करना आदि हैं.

डॉ.केवेर्न कोक्रेन, रोडेस विश्वविद्यालय, दक्षिण आफ्रिका प्रधान अन्वेषक होंगे. डॉ.जी. सैदा राव, निदेशक, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची भारत के पक्ष के प्रधान अन्वेषक होंगे. डॉ.श्याम एस.सलिम, सह प्रधान अन्वेषक अनुसंधान कार्यक्रम सह समन्वयक होंगे. वे भारत के टीम के अनुसंधान का समायोजन करेंगे और विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान टीम के साथ पत्राचार का कार्य भी करेंगे. भारत के टीम के सदस्य डॉ. पी.यू.सक्करिया, डॉ.आर.नारायणकुमार, डॉ. टी.वी.सत्यानन्दन, डॉ.प्रतिभा रोहित और डॉ. पी.एस.स्वातिलक्ष्मी हैं.

राजभाषा कार्यान्वयन

यूनिकोड पर हिन्दी कार्यशाला

यूनिकोड द्वारा हिन्दी में काम करने के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सी एम एफ आर आइ मुख्यालय के कर्मचारियों के लिए दिनांक 5 और 6 जून 2013 को दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी. श्री के.के.रामचन्द्रन, सहायक निदेशक (रा भा), आयकर कार्यालय, कोच्ची ने दिनांक 5 जून को क्लास चलाया. हिन्दी कार्यों के डिजिटल निपटान पर दिशा निर्देश करने के उद्देश्य से 6 जून 2013 को श्रीमती ई.के.उमा, तकनीकी अधिकारी (हिन्दी) ने व्यावहारिक सत्र चलाया.

डॉ.बी.मीनाकुमारी, डी डी जी द्वारा टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र के प्रयोगशाला एवं कार्यालय मकान का उद्घाटन

टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र का विस्तार किया गया प्रयोगशाला-कार्यालय मकान

नए निर्मित 'प्रयोगशाला एवं कार्यालय मकान' का उद्घाटन दिनांक 21 अप्रैल 2013 को डॉ.बी.मीनाकुमारी, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, नई दिल्ली ने परंपरागत दीप जलाकर किया. डॉ.जी.सैदा राव, निदेशक, सी एम एफ आर आइ, श्री एस.नटराजन, उपाध्यक्ष, वी ओ सी पोर्ट ट्रस्ट (टूटिकोरिन), सी पी डब्लियू डी के इंजिनीयर गण, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केंद, सी एम एफ आर आइ के सेवानिवृत्त वैज्ञानिक और कार्मिक, डीन, मात्स्यिकी कालेज एवं अनुसंधान संस्थान तथा कालेजों एवं विभिन्न सरकारी विभागों और प्रेस एंड मीडिया के लोग इस काय्रक्रम में उपस्थित थे.

सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र के शोर हॉल में सुबह 9.30 बजे उद्घाट न कार्यक्रम आयोजित किया गया. डॉ.एम.एस.मदन, प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र ने विशिष्ट व्यक्तियों का स्वागत किया. निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने अध्यक्षीय भाषण पेश करते हुए वर्तमान मात्स्यिकी अनुसंधान की आवश्यकताओं पर विवरण दिया. श्री एस.नटराजन, उपाध्यक्ष, वी ओ सी पोर्ट ट्रस्ट, टूटिकोरिन ने मुख्य अतिथि का भाषण देते हुए सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र के साथ उनके दीर्घकालीन और अटूट संबंध पर बताया और आगे भी मदद देने का आश्वासन दिया. डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र और डॉ.सी.मुत्तय्या, सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केंद्र ने बधाई भाषण पेश किए. डॉ.बी.मीनाकुमारी, डी डी जी, भा कृ अनु प, नई दिल्ली ने अपने उद्घाटन भाषण में अनुसंधान की आवश्यकताओं और चालू अनुसंधान के स्तर पर विवरण दिया. डॉ.आइ.जगदीश, प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र ने कृतज्ञता अदा किया और 10.30 बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ.

सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र के नए निर्मित प्रयोगशाला एवं कार्यालय मकान का उद्घाटन कार्यक्रम

डॉ.बी.मीनाकुमारी, डी डी जी (मा.) उद्घाटन भाषण देते हुए

मुम्बई अनुसंधान केंद्र के लिए सी आइ फल ई पुराने कैम्पस का द्वितीय तल

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का मुम्बई अनुसंधान केंद्र वर्ष 1947 में बम्बई सब-स्टेशन के रूप में स्थापित हुआ. महाराष्ट्र की समुद्री प्रग्रहण मात्स्यिकी के टिकाऊ विकास में केंद्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाया जा रहा है और यहाँ के मछुआरों की आजीविका सुनिश्चित करने के लिए पिंजरा मछली पालन लोकप्रिय बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाया जा रहा है. वर्ष 1967 में संस्थान और इस के केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा कृ अनु प) के अधीन लाया गया और सब-स्टेशन को मुम्बई के फोर्ट क्षेत्र में बोटावाला चेम्बेर्स में बदला गया. अनुसंधान केंद्र को वर्ष 1978 जुलाई में एम.जी.रोड, मुम्बई के सेना और नौसेना के विस्तृत मकान में बदला गया और फरवरी 2006 तक कार्यरत हुआ. केंद्र को मार्च 2006 में वेर्सोवा स्थित केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (सी आइ एफ ई) में सी आइ एफ ई द्वारा आबंटित कमरों में स्थानांतरित किया गया.

बाद में दिनांक 27 मई 2013 को डॉ.एस.अय्यप्पन, माननीय सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प ने डॉ.डब्लियू.एस.लाकड़ा, निदेशक/ कुलपति, सी आइ एफ ई, मुम्बई द्वारा डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ, कोचीन को सौंपा दिए गए सी एम एफ आर आइ के प्रयोगशाला एवं कार्यालय मकान याने कि सी आइ एफ ई, मुम्बई पुराने परिसर के द्वितीय तल का उद्घाटन किया. माननीय महानिदेशक ने भा कृ अनु प में इस तरह सहकारिता बढ़ाए जाने के लिए सी आइ एफ ई द्वारा किए गए महान कदम की सराहना की.

डॉ.एस.अय्यप्पन, महानिदेशक, भा कृ अनु प मुम्बई अनुसंधान केंद्र के प्रयोगशाला एवं कार्यालय मकान का उद्घाटन करते हुए

श्री तारीक अनवर, माननीय केंद्र राज्य मंत्री, कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में मुआइना

माननीय केंद्र मंत्री श्री तारीक अनवर कर्मचारियों का संबोधन करते हुए

श्री तारीक अनवर, संघ राज्य मंत्री, कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, भारत सरकार ने दिनांक 11 मई 2013 को सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र का मुआइना किया. श्री सुब्बरामी रेड्डी, सांसद भी माननीय मंत्री के साथ आए. डॉ. जी.महेश्वरुडू, प्रभारी वैज्ञानिक, विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र ने विशिष्ट व्यक्तियों का स्वागत किया और क्षेत्रीय केंद्र की सुविधाओं का विवरण दिया. माननीय मंत्री ने केंद्र में चलायी जाने वाली समुद्री संवर्धन गतिविधियों में बडी अभिरुचि दिखायी और ग्रूपर मछली प्रजनन और डिंभक पालन, शैवाल संवर्धन, रोटिफर और कोपीपोड संवर्धन, हरित शंबु संतति उत्पादन और पखमछली का पिंजरे में पालन जैसे केंद्र की समुद्री संवर्धन गतिविधियों की प्रशंसा की. माननीय मंत्री ने सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में की जाने वाली समुद्री मात्स्यिकी संपदा निर्धारण, इस क्षेत्र में आने वाले तीन समुद्रवर्ती राज्यों के मात्स्यिकी संपदा आंकडा संग्रहण और बाहरी गतिविधियों की परामर्श सेवा करना आदि प्रग्रहण मात्स्यिकी गतिविधियों की सराहना की. केंद्र के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों का संबोधन करते हुए उन्होंने सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में विकसित प्रौद्योगिकियों, जो आगामी वर्षों में मछुआरों के लिए सहायक निकलेगा, की सराहना की.

माननीय मंत्री पिंजरे के नमूने का निरीक्षण करते हुए

माननीय मंत्री ग्रूपर मछली के उंगलिमीनों का निरीक्षण करते हुए

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में सी एम एफ आर आइ परामर्श समिति की 17वीं बैठक का आयोजन

सी एम एफ आर आइ अनुसंधान परामर्श समिति की 17वीं बैठक मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में दिनांक 25 अप्रैल 2013 को 9.00 बजे से 3.30 बजे तक आयोजित की गयी. डॉ. जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग ने स्वागत भाषण दिया. डॉ.एम.वी.गुप्ता, अध्यक्ष, आर ए सी ने परिचय

अनुसंधान परामर्श समिति की 17वीं बैठक

अध्यक्ष एवं सदस्य, आर ए सी तथा निदेशक, सी एम एफ आर आइ पोम्पानो डिंभकों का निरीक्षण करते हुए

अध्यक्ष एवं सदस्य, आर ए सी तथा निदेशक, सी एम एफ आर आइ पर्यावरण चैंबर सुविधा का निरीक्षण करते हुए

भाषण दिया. डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने वर्ष 2012-2013 के दौरान संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों का विवरण दिया. डॉ.आर.नारायणकुमार, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी प्रभाग एवं सदस्य सचिव, आर ए सी ने 16 वीं आर ए सी बैठक की कार्रवाई रिपोर्ट पेश किया. प्रभागाध्यक्षों और प्रभारी वैज्ञानिकों ने क्रमशः प्रभागवार और केंद्रवार प्रस्तुतीकरण किया. निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने अपने अंतिम भाषण में आर ए सी अध्यक्ष और सदस्यों को कृतज्ञता अदा किया. डॉ.आर.नारायणकुमार, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी प्रभाग एवं सदस्य सचिव, आर ए सी ने कृतज्ञता अदा की. इसके बाद 3.00 बजे से 6.00 बजे तक आर ए सी अध्यक्ष एवं सदस्यों, प्रभागाध्यक्षों तथा प्रभारी वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय समुद्री मछली ब्रूडबैंक, पुनःसंचरण जलकृषि व्यवस्था (आर ए एस) प्रयोगशाला, समुद्री संवर्धन समुच्चय, पिंजरा खेत और नई स्फुटनशाला जैसे केंद्र की समुद्री संवर्धन सुविधाओं का मुआइना किया.

मांगलूर अनुसंधान केंद्र में विश्व पर्यावरण दिवस समारोह

केंद्र में दिनांक 5 जून 2013 को विश्व पर्यावरण दिवस तथा विश्व महासागर दिवस मनाया गया. विश्व पर्यावरण दिवस पर अवगाह जगाने के उद्देश्य से केंद्र द्वारा पोस्टर तैयार किया गया. डॉ.यू महेश कुमार, क्षेत्रीय निदेशक (पर्यावरण), सी आर इज़ेड कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे.

केंद्र में विश्व पर्यावरण दिवस समारोह का दृश्य

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

कोबिया और सिल्वर पोम्पानो मछलियों की स्फुटनशाला और पालन प्रौद्योगिकियों का निदर्शन

विशाखपट्टणम के निकट बोगपुरम स्थित निजी स्फुटनशाला कोबिया और सिल्वर पोम्पानो मछलियों की स्फुटनशाला प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण के लिए समझौता ज्ञापन के लिए आगे आए. सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों द्वारा स्फुटनशाला का निरीक्षण किया गया और जीवंत खाद्य का संवर्धन कार्य शुरू किया गया. कोबिया और सिल्वर पोम्पानो मछलियों के संतति उत्पादन के लिए आवश्यक परिवर्तन किया जा रहा है.

आंध्रा प्रदेश के विजयवाडा के निकट नागयलंका के एक निजी उद्यम द्वारा *पेनिअस वन्नामै* के साथ सिल्वर पोम्पानो के पालन का निदर्शन करने के लिए समझौता ज्ञापन के लिए सी एम एफ आर आइ के साथ प्रस्ताव रखा गयी. इसके लिए तालाब की तैयारी समाप्त हो गया. डॉ. अब्दुल नासर और डॉ.आर.जयकुमार ने मई 2013 महीने में आंध्रा प्रदेश के विशाखपट्टणम के निकट बोगापुरम के निजी स्फुटनशाला और विजयवाडा के निकट नागयलंका के निजी पालन खेत का मुआइना किया. सिल्वर पोम्पानो का निदर्शन खेत में पालन करने की योजना जून 2013 में बनायी गयी.

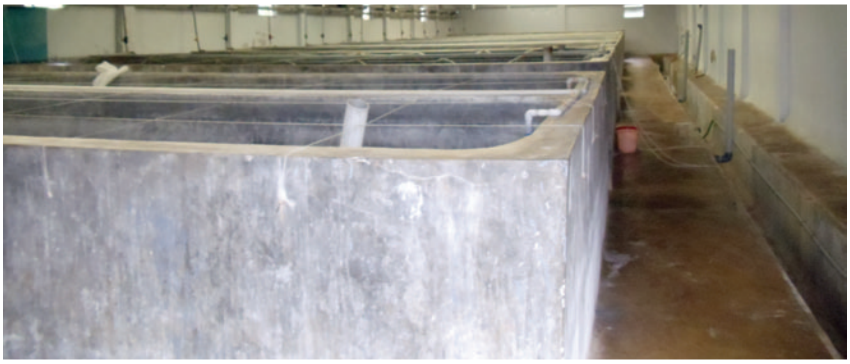

आंध्रा प्रदेश के बोगापुरम की निजी स्फुटनशाला का आंतरिक दृश्य

माननीय केंद्र कृषि मंत्री श्री शरद पवार द्वारा सी एम एफ आर आइ पुस्तक - भारत के पवित्र प्रशंख का विमोचन

माननीय केंद्र कृषि मंत्री श्री शरद पवार नई दिल्ली में भा कृ अनु प के 85वां स्थापना दिवस दिनांक 16.07.2013 को डॉ.ए.पी.लिप्टन, डॉ.जी.सैदा रावु और डॉ.आइ.जगदीश द्वारा रचित 'भारत के पवित्र प्रशंख' नामक पुस्तक का विमोचन करते हुए

डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ द्वारा पुस्तक की प्रस्तावना

पवित्र प्रशंख, जिसका प्रचलित नाम दक्षिणावर्ती शंख है, अतिप्राचीन काल के इतिहास से लेकर भारतीय संस्कृति एवं कला का मूर्त प्रतीक है. लगभग 785 बी सी से लेकर कई दशकों से पवित्र प्रशंख की लोकप्रियता फैली हुई है. कोरकै तमिल नाडु के पूर्व भाग में स्थित पोर्ट शहर है. उसी समय वहाँ पांड्य राजा शासन कर रहे थे और पेरिप्लस ऑफ दि रेड सी, जो नौचालन और रेशम के विपणन पर विवरण देता है, के अनुसार इस दशक के मध्य तक प्रशंखों का विपणन विकसित हुआ था.

भारतीय महाकाव्यों में पवित्र प्रशंखों के महत्वों का विस्तृत विवरण दिया हुआ है और हिन्दू धार्मिक विश्वासों में कई मंगलसूचक कार्यविधियों में प्रशंख का महत्वपूर्ण स्थान है. हिन्दू धर्म में प्रशंख का प्रमुख स्थान है और यह सौन्दर्य, प्रतिभा, पवित्रता और मंगल का प्रतीक है. भारत में शंख नाद उत्पत्ति का पहला नाद ऊँ से जुडा हुआ है. पुराणों के अनुसार रक्षक देवता महाविष्णु शंख का मूल धारक है और वे अपने बाएं हाथ में शंख का ग्रहण करते हैं. पौराणिक कथा के अनुसार दक्षिणावर्ती शंख देवों और असुरों द्वारा किए गए समुद्र मंथन के परिणाम से उत्पन्न हुआ है और सुदर्शन चक्र भी इस तरह प्राप्त और एक उत्पाद है. नकारात्मक माहौल और बुरी भावनाओं को हटाने के तुरही के रूप में शंख का उपयोग किया जाता है और पवित्र जल लेने के पात्र के रूप में भी शंख उपयुक्त किया जाता है. शंख हिन्दू धर्म के प्रतीकात्मक और धार्मिक रिवाज़ का अभिन्न भाग है और शंख बजाने से अनुष्ठानों या धार्मिक कार्यों का शुभारंभ का संकेत होता है और अतीत काल में युद्धों का आरंभ ही शंख बजाने के संकेत से होता था.

शंख का रूपायन हाथ के बाएं से दाएं तरफ (दक्षिणावर्ती शंख) होता है और यह भूमि के बहुत कम आवृत्ति के प्राकृतिक ब्रह्मांडीय कंपनों को बढ़ाकर मानव के कानों लिए गुनगुना आवाज़ बना सकता है. यह सबसे कम आवृत्ति (एक्स्ट्रीम्ली लॉ फ्रीक्वन्सी (ई एल एफ)) प्रतिध्वनि को भूमि के हृदय के धड़कन की प्रतिध्वनि से संदर्भित किया जाता है और इसे पर शूमान्स रिसोनन्स कहा जाता है. शंख का आंतरिक भाग चेतना के मोर्फोजेनिटिक क्षेत्र, जो बडे जीवों में वस्तुओं का आकार देने की बुद्धि का आधार है, के रूप में बनाया गया है. निस्संदेह यह कहा जा सकता है कि भारत के धार्मिक-सांस्कृतिक इतिहास में शंख का महत्वपूर्ण और वास्तविक स्थान है.

बुद्ध धर्म में, शंख बजाने से पीड़ा से जीतने का संकेत मिलता है. चीन बुद्ध धर्म में शंख कवच समृद्धिपूर्ण यात्रा का प्रतीक है और इसलाम धर्म में परमात्मा का शब्द सुनने का प्रतीक है. क्वेटसलकॉटल देवता, जिन्होंने शंख की सहायता से जीवन का सृजन किया है, को शंख का छाती कवच पहनते हुए चित्रित किया है. प्राचीन ग्रीस में ट्राइटन पोसीडन और आम्फीट्राइट देवताओं का पुत्र है, जिनको शंख से बनायी गयी तुरही से वर्णित किया गया है और इस तुरही को समुद्र के तरंगों को उठाने और शांत करने के लिए उपयुक्त करता था.

आधुनिक भारत में शंख को अलंकार की चीज़ से बढ़कर श्रद्धा या सम्मान के रूप में माना जाता है और शादी जैसे पवित्र अवसरों में शंख से बनायी गयी चूडियाँ पहनते हैं.

इस पुस्तिका में पवित्र शंख को भारत के महासागरीय क्षेत्र की प्राकृतिक संपदा, जिस पर कई अन्य देशों द्वारा अनुसंधान और अध्ययन किया गया है, के प्रासंगिक जैव-प्राचलों पर स्पष्ट रूप से चित्रण और वर्णन किया गया है. इस जाति की विरलता और भारत के महाद्वीप के चारों ओर के विशेष आवास स्थान को देखते हुए इस संपदा के भूभाग का परिरक्षण, संरक्षण और पुनरुज्जीवन करना हमारा कर्तव्य है. इस पुस्तक में समुद्र रैंचन, जो स्टॉक की कमी की पूर्ति और टिकाऊ बनाने का तरीका है, जैसे परिरक्षण और पुनःपूर्ति तरीकों पर विस्तृत रूप से अध्ययन किया गया है. अन्य मात्स्यिकी संपदाओं से भिन्न होकर इस संपदा का विशेष प्रबंधन किया जाना चाहिए, क्योंकि हमारे देश के स्थानिक और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में इस संपदा का प्रमुख स्थान है. शंख का उपभोग हमारे धार्मिक गतिविधियों के साथ अनन्य रूप से जुडे होने कारण इस के परिरक्षण और पुनःपूर्ति और संग्रहणोत्तर इस्तेमाल में भी धार्मिक परिवेश होना चाहिए. विज्ञान और अनुसंधानकारों द्वारा प्रतिपादन की गयी इस विरल संपदा के प्रबंधन से जुडे हुए सारे तरीकों को प्रमुखता दी जानी चाहिए और इन गतिविधियों में देश के धार्मिक प्रमुखों को सम्मिलित किया जाना चाहिए क्योंकि उनको इन संपदाओं पर वास्तविक जानकारी होगी और उनके प्रभाव से सामुदायिक स्तर पर सकारात्मक स्थायित्व होगा.

माननीय केंद्र कृषि मंत्री श्री शरद पवार द्वारा भारत में पिंजरा जलकृषि पुस्तक का विमोचन

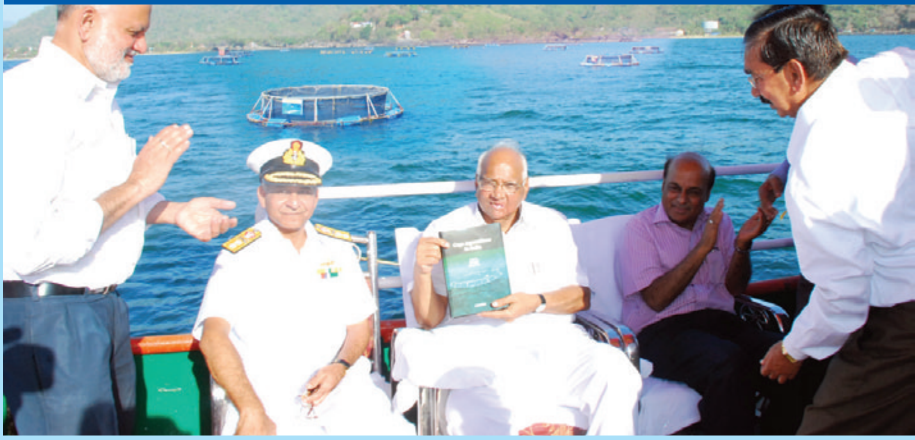

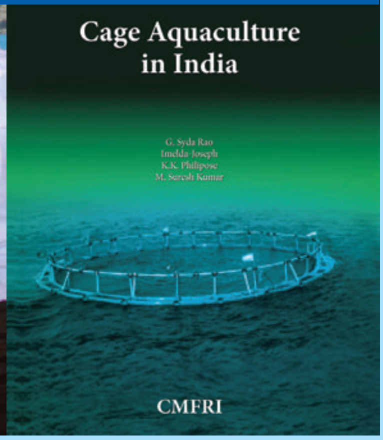

माननीय केंद्र कृषि मंत्री श्री शरद पवार पोत में सी एम एफ आर आइ पुस्तक 'भारत में पिंजरा जलकृषि' का विमोचन करते हुए

डॉ.जी.सैदा राव, डॉ.इमेल्डा जोसफ, डॉ. के.के.फिलिप्पोस और एम.सुरेश कुमार द्वारा रचित और केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ) द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'भारत में पिंजरा जलकृषि' इन रचयिताओं की महान कृति और इस विषय पर लिखित प्रथम बृहत् प्रकाशन है.

सी एम एफ आर आइ द्वारा प्रकाशित 'भारत में पिंजरा जलकृषि' नामक पुस्तक का विमोचन दिनांक 19 अप्रैल 2013 को माननीय केंद्र कृषि मंत्री श्री शरद पवार द्वारा कारवार में पोत पर किया गया.

डॉ.एस.अय्यप्पन, महानिदेशक, भा कृ अनु प द्वारा सी एम एफ आर आइ प्रकाशन भारत के समुद्री झींगों पर हस्तपुस्तिका का विमोचन

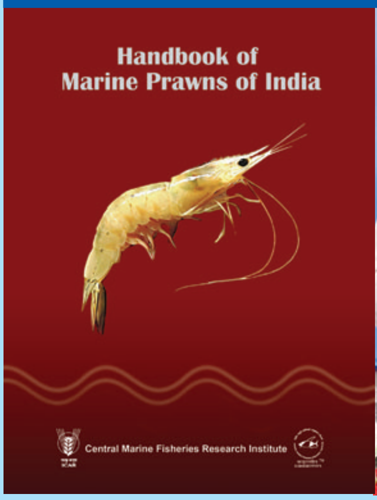

डॉ.एस.अय्यप्पन, महानिदेशक, भा कृ अनु प वेरावल क्षेत्रीय केंद्र में सी एम एफ आर आइ प्रकाशन का विमोचन करते हुए

झींगा मात्स्यिकी पर यथासमय प्राप्त सूचनाओं का अद्यतन करके संस्थान ने 'भारत के समुद्री झींगों पर हस्तपुस्तिका' नामक प्रकाशन का विमोचन किया. पुस्तक में संस्थान के वर्तमान एवं भूतपूर्व वैज्ञानिकों द्वारा झींगों की प्रग्रहण मात्स्यिकी के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है.

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में सी एम एफ आर आइ ई पुस्तक का विमोचन

सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प डॉ. एस.अय्यप्पन ने विपिनकुमार वी.पी., श्याम एस. सलिम, नारायणकुमार आर., मदन एम. एस., रामचन्द्रन सी., स्वातिलक्ष्मी पी.एस. और जोनसन बी. द्वारा लिखित 'समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में तटीय ग्रामीण कर्जदारी और माइक्रोफिनान्स का संघात' नामक 'ई पुस्तक' का विमोचन किया.

महानिदेशक मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में ई पुस्तक का विमोचन करते हुए

महानिदेशक द्वारा “गुजरात के *सिदी* आदिवासियारें द्वारा सफलतापूर्वक पिंजरा मछली पालन ” नामक चलचित्र का विमोचन

सी एम एफ आर आइ के संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन एकक के अंदर “गुजरात के *सिदी* आदिवासियों द्वारा सफलतापूर्वक पिंजरा मछली पालन” नामक चलचित्र का निर्माण किया गया है. इस चलचित्र में भा कृ अनु प के ट्राइबल सब प्लान कार्यक्रम के अंदर, सी एम एफ आर आइ के गाल्वनाइस्ड अयर्न पिंजरों का रूपायन, लंगर, जाल का इस्तेमाल, अशन और मछली पालन के लिए आवश्यक अन्य प्रबंधन व्यवहार किस प्रकार समुद्री मछली पालन के लिए गुजरात के *सिदी* आदिवासियों को प्रभावित किया गया, इस पर विस्तृत विवरण दिया गया है.

इन आदिवासियों ने ट्राइबल सब प्लान कार्यक्रम के अंदर कठिन प्रयास और सहभागिता से अरब सागर में सोमनाथ तट पर समुद्री पिंजरों का फार्म विकसित किया. इस से कुल 26 लाख रुपए का लाभ हुआ. इस प्रयास द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने इन आदिवासियों को गरीबी की बदल आजीविका के रूप में सशक्त बनाया.

महानिदेशक एवं सचिव, डेयर डॉ.एस.अय्यप्पन दिनांक 12 मई 2013 को सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में “गुजरात के *सिदी* आदिवासियारें द्वारा सफलतापूर्वक पिंजरा मछली पालन ” नामक चलचित्र का विमोचन करने का दृश्य

eprints@cmfri द्वारा सी एम एफ आर आइ प्रकाशनों की वैश्विक दृश्यमानता

सी एम एफ आर आइ रिपोसिटरी को भारत का उत्कृष्ट ओपन एक्सेस इन्स्टिट्यूशनल पुरस्कार 2012

पुस्तकालय एवं प्रलेखन केंद्र ने संस्थानों के प्रकाशनों के लिए ओपन एक्सेस इन्स्टिट्यूशनल रिपोसिटरी eprints@cmfri विकसित किया है और अब विश्वव्यापक तौर पर यह प्रमुख अनुसंधान सूचना केंद्र के रूपा में मान्यता प्राप्त है. इस में प्रकाशन का वर्ष, लेखक, विभाग, विषय और प्रलेखन प्रकार के अनुसार ब्राउस करने की संस्थानीय रिपोसिटरी सुविधाएं मौजूद है. कई विकल्पों से लेखक, शीर्षक, विषय जैसे आधुनिक प्रकार की सुविधाएं भी प्रदान की गयी हैं. सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों द्वारा वर्ष 2012 - 2013 के दौरान रचित 350 से अधिक लेख अपलॉड किए गए हैं और ये ‘eprints@cmfri’ में उपलब्ध हैं. अब तक लगभग 9600 से अधिक वैज्ञानिक लेख अपलॉड किए गए हैं. अप्रैल, 2012 से 31 मार्च 2013 तक eprints@cmfri के उपयोग की रिकार्ड की गयी है. लगभग 198 से अधिक देशों में रिपोसिटरी का उपयोग किया गया है और 137303 बाद रिपोसिटरी में आए और वैज्ञानिक लेखों के पूरे पाठ का डाउनलॉड किया गया है. सबसे अधिक बार रिपोसिटरी का उपयोग किया गया देश भारत है- 80,563 बार, इसके बाद यू एस ए 9030, फिलिप्पीन्स 3801, मलेशिया 2953, यू के 2181, इन्डोनेशिया 1975, आस्ट्रेलिया 1692, मेक्सिको 1431, चीन 1311, थायलान्ड 1286 बार भी. eprints@cmfri को भारत का उत्कृष्ट ओपन एक्सेस इन्स्टिट्यूशनल पुरस्कार 2012 प्राप्त हुआ है.

आइ जे एफ के इंपाक्ट फैक्टर में भारी वृद्धि

पुस्तकालय व प्रलेखन केंद्र ने इंडियन जर्नल ऑफ फिशरीस को रयटेर्स सयन्स साइटेशन सूचिका और एल्सेविएर्स स्कोपस और अन्य डाटाबेसों में सूचीकृत करने का ईमानदार प्रयास किया. अब इंडियन जर्नल ऑफ फिशरीस का इन्टरनैशनल इंपैक्ट फैक्टर 0.04 से 0.195 तक बढ़ गयी है. इंडियन जर्नल ऑफ फिशरीस का एन ए ए एस रेटिंग भी 4.5 से 6.2 तक बढ़ गया है.

प्रदर्शियाँ

सोसाइटी ऑफ फिशरीस तकनोलजीस (भारत) और सी आइ एफ टी द्वारा संयुक्त रूप से 21 से 23 मई 2013 के दौरान सेन्टर होटल, कोच्ची में ‘ग्रीनिंग फिशरीसः मात्स्यिकी में हरित प्रौद्योगिकियों की ओर’ विषय पर संयुक्त रूप से आयोजित अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा के सिलसिले में प्रदर्शनी.

कृ वि कें का पोक्काली चावल-चिंगट-मछली एकीकृत पालन निदर्शन: एक सफल कहानी

सी एम एफ आर आइ का कृ वि कें (एरणाकुलम) ने कृषि में जलवायु अनुकूल राष्ट्रीय पहल (एन आइ सी आर ए) परियोजना के प्रौद्योगिकी निदर्शन कार्यक्रम के अंदर एषिक्करा, पिषला और कडमक्कुडी के पोक्काली चावल खेतों में चावल, चिंगट और पख मछली के एकीकृत पालन के पैकेज से पोक्काली पैदावार व्यवस्था में पुनरुज्जीवन के नए तरीके का सफलतापूर्वक निदर्शन किया. इस नए तरीके में, एकांतर चावल और चिंगट पालन के साथ उच्च सांद्रता में पख मछली पालन को एकीकृत करने का प्रयास है. कृषि विज्ञान केंद्र ने पिछले एक वर्ष से लेकर इस नए तरीके में अग्रगामी निदर्शन चलाया जा रहा है. एषिक्करा वडक्कुमभागम पाडशेखरम में 10 अप्रैल को डॉ.जी.सैदा राव, निदेशक, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और डॉ.पी.यु.सक्करिया, प्रधान अन्वेषक, एन आइ सी आर ए परियोजना की उपस्थिति में श्री बी.रामचन्द्रन, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट (ए डी एम), एरणाकुलम जिला ने इस नयी पैदावार व्यवस्था की फसलकाट का उद्घाटन किया.

ए डी एम (एरणाकुलम) द्वारा पोक्काली -मछली संग्रहण मेले के उद्घाटन का दृश्य

एक हेक्टयर पोक्काली खेत में पिंजरा, कैटवाक और अन्य सुविधाएं सजाने के लिए आवश्यक नियत लागत 88,200/- रुपए है. लगभग 5 वर्षों तक इन सुविधाओं का उपयोग किया जा सकता है. अतः एक वर्ष के लिए नियत लागत लगभग 17,640/- रुपए हो जाएगा. प्रतिवर्ष का परिचालन लागत 89,380/- रुपए है. यह आकलन किया जाता है कि एक खेत से 324 कि.ग्रा. पेर्लस्पोट मछली और 312 कि.ग्रा. मल्लेट मछली का संग्रहण किया जा सकता है. प्रतिवर्ष का सकल आय पेर्लस्पोट को प्रतिकिलोग्राम के लिए 250/- रुपए और मल्लेट मछली को प्रतिकिलोग्राम के लिए 350/- रुपए के खेत पर दाम की दर में 90,200/- रुपए है. इस प्रकार पहले वर्ष का लाभ 83,180/- रुपए आकलित किया गया है. सिर्फ चावल के पैदावार से प्राप्त वर्तमान लाभ केवल 15,000/- रुपए है और चावल-चिंगट पालन से प्राप्त लाभ 50,000/- रुपए है.

कृ वि कें का उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ई डी पी)

पिछली तिमाही के दौरान कृ वि कें ने तीन उद्यमिता विकास कार्यक्रम आयोजित किए. कोतमंगलम के संस्कारा में जायफल से मूल्य वर्धित उत्पाद विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यक्रम में 80 प्रगतिशील उद्यमियों ने भाग लिया. कार्यक्रम में जायफल से औद्योगिक स्तर पर जाम, स्क्वाश और वाइन बनाने के तरीके का निदर्शन किया गया. भारत के खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण, विपणन चिह्न संरक्षण, लेबलिंग, पैकिंग और विपणन पर भी प्रशिक्षण आयोजित किया गया. श्री वी.वी.कुरियन, कोतमंगलम नगरपालिका की स्थायी समिति का अध्यक्ष ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया. इसी प्रकार खुम्भी पैदावार पर तेवरा परिसर में दिनांक 26.04.2013 को एक और कार्यक्रम आयोजित किया गया जिस में लगभग 30 प्रगतिशील उद्यमियों ने भाग लिया.

कृ वि कें द्वारा एरणाकुलम जिले में पालक का सफलतापूर्वक पैदावार

एरणाकुलम जिले के कुम्बलंगी, एडवनक्काड और चोटानिक्करा के किसानों के खेतों में पालक के पैदावार के खेत परीक्षण सफल रूप से किया गया. कुम्बलंगी में दिनांक 12.4.2013 को पालक फसलकाट मेला आयोजित की गयी. श्रीमती उषा प्रदीप, अध्यक्ष, कुम्बलंगी ग्राम पंचायत ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया. श्री टोनी कोच्चेरी, पंचायत सदस्य, श्रीमती जगदाम्बाल, कृषि अधिकारी, श्रीमती उषा देवी, सहायक कृषि निदेशक भी उपस्थित थे. बाकी सभी किस्मों जिनका उत्पादन प्रति हेक्टयर से 2 टन है, की अपेक्षा हरित शोभा किस्म का उत्पादन प्रति हेक्टयर से 2.2 टन था.

श्री षोजी जोय एडिसन, एस एम एस (उद्यानकृषि) को राष्ट्रीय पुरस्कार

श्री षोजी जोय एडिसन द्वारा रचित वनस्पति अंकुरों की बढ़ती के लिए विभिन्न कोकोपीटधरातलों की अनुयोज्यता का परीक्षण विषयक पोस्टर को इंडियन सोसाइटी फोर प्रोटक्टड कल्टिवेशन (आइ एस पी सी), सेन्टर फोर प्रोटक्टड कल्टिवेशन तकनोलजी (सी पी सी टी), भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 12 मार्च, 2013 को संरक्षित पैदावार के विकास विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रथम पुरस्कार और उत्तम पोस्टर पुरस्कार प्राप्त हुए. डॉ.आर.बी.सिंह (भूतपूर्व ए डी जी, एफ ए ओ, भूतपूर्व अध्यक्ष, ए एस आर बी) ने डॉ.एन.के.कृष्ण कुमार (डी डी जी, उद्यानकृषि), डॉ.ब्रह्म सिंह, कार्यकारी निदेशक, डी आर डी ओ और डॉ.अनवर सलाम (भूतपूर्व कुलपति, एस के यू ए एस टी, जम्मु) की उपस्थिति में पुरस्कार प्रदान किया.

श्री षोजी जोय एडिसन पुरस्कार ग्रहण करते हुए

- **डॉ.(श्रीमती)वी.कृपा, अध्यक्ष, एफ ई एम डी, डॉ.के.एस.मोहम्मद, अध्यक्ष, एम एफ डी और डॉ.आर.जयभास्करन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने एम ओ ई एफ, इंडिया हैबिटाट सेन्टर, नई दिल्ली में दिनांक 13-14 मई, 2013 को आयोजित इंडो-जर्मन परियोजना योजना कार्यशाला में भाग लिया.
- **डॉ.पी.यू.सक्करिया**, अध्यक्ष, डी एफ डी एवं अध्यक्ष, पोत प्रबंधन सेल ने दिनांक 5 अप्रैल 2013 को पोत निर्माण के सिलसिले में गोवा शिपयार्ड का भ्रमण किया.
- **डॉ.टी.वी.सत्यानन्दन,** अध्यक्ष, एफ आर ए डी ने "केरल तट पर आनाय रोध से हुआ संघात" पर अध्ययन करने की विशेषज्ञ समिति के सदस्य के रूप में माननीय मात्स्यिकी मंत्री, केरल सरकार के चैम्बर में दिनांक 18.05.2013 को आयोजित बैठक में भाग लिया.
- **डॉ.जी.महेश्वरुडु,** प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र ने एन आइ आर डी, हैदराबाद में 30 अप्रैल 2013 को "समुद्री संवर्धन कार्यविधियों के लिए वित्तीयन के अवसर" पर आयोजित बैठक में भाग लिया.
- **डॉ.ए.पी.दिनेशबाबु,** प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केंद्र और **डॉ.पी.एस. स्वाति लक्ष्मी,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने आइ ए आर आइ परिसर में 17 से 19 जून 2013 को आयोजित एन आइ सी आर ए की द्वितीय वार्षिक कार्यशाला में भाग लिया.

विदेश में प्रतिनियुक्ति

डॉ.सोमी कुरियाकोस और डॉ.मिनी के.जी. थायलान्ड में

डॉ.सोमी कुरियाकोस और **डॉ.मिनी के.जी.** ने बे ऑफ बंगाल लार्ज मराइन इकोसिस्टम प्रोजक्ट एंड दि इंडियन ओशियन ट्यूना कमीशन द्वारा बैंकोक में 20-24 मई 2013 के दौरान आयोजित बी ओ बी एल एम ई-आइ ओ टी सी मात्स्यिकी स्टॉक निर्धारण प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया.

- **डॉ.प्रतिभा रोहित**, प्रधान वैज्ञानिक ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली में 13 जून, 2013 को "परिवर्तनशील जलवायु में टिकाऊ समुद्री खाद्य सुरक्षा और कार्बन की समस्याएंः आस्ट्रेलिया और भारत की चुनौतियाँ" पर परियोजना प्रस्तुत किया.
- **डॉ.शुभदीप घोष**, वरिष्ठ वैज्ञानिक और **डॉ. बिश्वजीत दास**, तकनीकी अधिकारी, सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र ने सी आइ एफ आर आइ, बैरकपुर में 13-14 अप्रैल 2013 को आयोजित द्वितीय परामर्श समिति बैठक और हिल्सा परियोजना के उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लिया.
- **डॉ.आर.जयभास्करन**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 16-20 अप्रैल 2013 को तटीय अपरदन निदेशालय, केंद्रीय जल आयोग, नई दिल्ली द्वारा लक्षद्वीप में एन्टी सी इरोशन के सिलसिले में तटीय संरक्षण एवं विकास परामर्श समिति (सी पी डी ए सी) के विशेषज्ञ समिति सदस्य के रूप में भाग लिया.
- **डॉ.टी.एम.नजमुदीन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने भारतीय सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, में 8-10 मई 2013 के दौरान वित्तीय प्रबंधन व्यवस्था सहित प्रबंधन सूचना व्यवस्था (एम आइ एस) के कार्यान्वयन के लिए ई आर पी समाधान के उपयोक्ता स्वीकार्य परीक्षण पर कार्यशाला के अंदर 'परियोजनाएं' विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया.
- **डॉ.शुभदीप घोष**, प्रभारी वैज्ञानिक, **श्रीमती मुक्ता एम., श्री लवसन एड्वेर्ड, श्री एन.राजेन्द्र नाइक**, वैज्ञानिक ने सेन्टर फोर स्टडीस ऑन बे ऑफ बंगाल, आंध्रा विश्वविद्यालय के सम्मेलन कक्ष में 17 मई 2013 को अध्यक्ष एवं कार्यकारी निदेशक, महासागरीय अनुसंधान पर वैज्ञानिक समिति (एस सी ओ आर) के साथ आयोजित सक्रिय चर्चा में भाग लिया.
- **डॉ.विपिनकुमार वी.पी.**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 28 फरवरी से 6 मार्च 2013 के दौरान एन ए ए आर एम, हैदराबाद में अनुसंधानकारों के लिए प्रौद्योगिकी प्रबंधन के प्रबंधन विकास कार्यशाला में भाग लिया.
- **डॉ.श्याम एस.सलिम,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने केरल कृषि विश्वविद्यालय मुख्यालय, वेल्लानिक्करा में 3 अप्रैल 2013 को आयोजित शैक्षिक परिषद की 120 वीं बैठक में भाग लिया.

उत्कृष्ट लेख पुरस्कार

श्रीमती सुजिता तोमस और ए.पी.दिनेशबाबु द्वारा लिखित **'बहुदिवसीय आनायन द्वारा CO_2 उत्सर्जन कम करने के लिए मात्स्यिकी संपदाओं का जी आइ एस पर आधारित संपदा मानचित्रण'** लेख को सोसाइटी ऑफ फिशरीस तकनोलजिस्ट (भारत) और सी आइ एफ टी, कोचीन द्वारा संयुक्त रूप से **मात्स्यिकी में हरित प्रौद्योगिकियों की ओर हरित मात्स्यिकी** विषय पर 21-23 मई 2013 के दौरान आयोजित अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा के हरित मत्स्य-मात्स्यिकी संपदाएं और ऊर्जा सक्षम परिस्थिति अनुकूल प्रग्रहण व्यवस्थाएं विषयक तकनीकी सत्र के अंदर उत्तम लेख पुरस्कार प्राप्त हुआ.

डॉ.सुजिता तोमस उत्तम लेख पुरस्कार स्वीकार करती हुई

उन्होंने दिनांक 13 जून 2013 को वसंत स्क्वायर माल, लोवर ग्राउन्ड फ्लोर, वसंत कुंज, नई दिल्ली में परिवर्तनशील जलवायु में टिकाऊ समुद्री खाद्य सुरक्षा और कार्बन की समस्याएंः आस्ट्रेलिया और भारत की चुनौतियाँ विषयक परियोजना के प्रस्तुतीकरण के लिए विज्ञान एवं इंजिनीयरी बोर्ड में आयोजित सलाहकार समिति की बैठक में भाग लिया.

स्काइप द्वारा एम एस यू-सी एम एफ आर आइ सहभागिता के भाग के रूप में दिनांक 24 अप्रैल 2013 को मिचिगन राज्य विश्वविद्यालय के स्नातक छात्रों के लिए 'भारतीय मात्स्यिकी सेक्टर में विपणन करार और संघातः बाधाएं और उद्देश्य' विषय पर आपसी चर्चा सहित भाषण पेश किया.

उत्कृष्ट लेख पुरस्कार : श्याम एस. सलिम, वी. कृपा, पी.यू.सक्करिया और अम्ब्रोस (2013) केंद्रीय मात्स्यकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचीन और मात्स्यिकी प्रौद्योगिकीकार संघ (एस ओ एफ टी आइ), भारत, कोचीन द्वारा 21-23 मई 2013 को 'मात्स्यिकी में हरित प्रौद्योगिकियों की ओर हरित मात्स्यिकी' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा में 'जलवायु परिवर्तन के कारण और प्रभाव पर तटीय मछुआरों की अवधारणाः ए पी ए आर एस कार्यप्रणाली रूपकल्पना' विषयक मौखिक प्रस्तुतीकरण के लिए उत्कृष्ट लेख पुरस्कार. तकनीकी सत्र 4: 'एक्शन ब्लू' - मात्स्यिकी में श्रेष्ठ भविष्य के लिए विशेष पहल.

उत्कृष्ट पोस्टर पुरस्कारः डॉ.गीता शशिकुमार, डॉ.के.एस.मोहम्मद और डॉ.पी.के.अशोकन द्वारा कर्नाटक में जैविक जलकृषिः सफलता की कहानी विषय पर रचित पोस्टर को उत्कृष्ट पोस्टर पुरस्कार मिला. केंद्रीय मात्स्यकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचीन और मात्स्यिकी प्रौद्योगिकीकार संघ (एस ओ एफ टी आइ), भारत, कोचीन द्वारा 21-23 मई 2013 को 'मात्स्यिकी में हरित प्रौद्योगिकियों की ओर हरित मात्स्यिकी' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा के भविष्य के लिए स्वच्छ जल-जलकृषि उत्पादन व्यवस्थाएं विषयक तकनीकी सत्र में पुरस्कार प्रदान किया गया.

कार्मिक समाचार

कार्यभार ग्रहण

1. डॉ.जी.महेश्वरुडु, प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र ने दिनांक 16.05.2013 को सी एम एफ आर आइ मुख्यालय, कोचीन में प्रभागाध्यक्ष, क्रस्टेशियन मात्स्यिकी प्रभाग के पद का ग्रहण किया.
2. डॉ.शुभदीप घोष, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दिनांक 14.05.2013 को सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक के पद का ग्रहण किया.

नियुक्तियाँ

नाम व पदनाम	नियुक्त पद	केंद्र	प्रभावी तारीख
श्रीमती जी.हेमलता	सहायक वित्त एवं लेखा अधिकारी	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	13.03.2013
कुमारी प्रियंका कुमारी	सहायक	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	09.04.2013
डॉ.अमीर कुमार शामल	वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	10.04.2013
डॉ.शेखर मेखराजन	वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	10.04.2013
श्रीमती कार्तीरेड्डी श्यामला	वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	11.04.2013
श्री विनय कुमार वास	वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	11.04.2013
श्री आशिश चौबे	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	17.05.2013
श्री चन्द्र मौली शर्मा	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	21.05.2013

पदोन्नतियाँ

नाम व पदनाम	नियुक्त पद	केंद्र	प्रभावी तारीख
श्रीमती के.पी.शैलजा, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	कालिकट अनुसंधान केंद्र	27.12.2012 (अपराह्न)
श्रीमती पोन्नम्मा राधाकृष्णन, सहायक	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	17.04.2013
श्री सी.पुरन्धरा शेट्टी, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	मांगलूर अनुसंधान केंद्र	17.04.2013
श्री एम.एम.वानवी, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	25.04.2013
श्रीमती पी.एन.दीपा, निम्न श्रेणी लिपिक	उच्च श्रेणी लिपिक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	17.04.2013
श्रीमती फेबीना पी.ए., निम्न श्रेणी लिपिक	उच्च श्रेणी लिपिक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	17.04.2013
श्रीमती मंजू जोस, निम्न श्रेणी लिपिक	उच्च श्रेणी लिपिक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	29.04.2013
श्री वी.मुनियसामी, एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	30.04.2013
श्री राजेन्द्र डी.हुल्सवार, एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	कारवार अनुसंधान केंद्र	01.05.2013
श्री डी.जगण्णा, एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	30.04.2013(अपराह्न)
श्रीमती एम.पी.श्यामला, एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	01.06.2013
श्री सुनिल पी.वी., एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	01.06.2013
श्री ए.के.षाजी, एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	01.06.2013
श्रीमती शीला पी.पी., एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	01.06.2013
श्रीमती प्रमीला हारिश बोरकर, एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	कारवार अनुसंधान केंद्र	01.06.2013
श्रीमती पी.एस.सुमती, सहायक	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	12.06.2013

बैठकें

1. सी एम एफ आर आइ की अनुसंधान सलाहकार समिति की 17 वीं बैठक दिनांक 25.04.2013 को सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र, मंडपम कैंप में आयोजित की गयी.
2. सी एम एफ आर आइ की संस्थान अनुसंधान परिषद की 20 वीं बैठक 10-14 जून 2013 के दौरान कोचीन में आयोजित की गयी.
3. सी एम एफ आर आइ की संस्थान प्रबंधन समिति की 74 वीं बैठक दिनांक 18.06.2013 को सी एम एफ आर आइ मुख्यालय, कोचीन में आयोजित की गयी.

डॉ.आर.सत्यदास, अध्यक्ष, कडलमीन संपादकीय मंडल की सेवानिवृत्ति

डॉ.आर.सत्यदास, प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ विझिंजम अनुसंधान केंद्र अधिवर्षिता पर दिनांक 30 जून 2013 को सेवानिवृत्त हो गए. अनुसंधान अध्येता के रूप में संक्षिप्त कार्यकाल तक नई दिल्ली में कार्यरत होने के बाद उन्होंने वर्ष 1977 के ए आर एस बैच में कृषि-अर्थविज्ञान विषय पर वैज्ञानिक के पद पर सी ए इज़ेड आर आइ, जोधपुर में कार्यग्रहण किया. उन्होंने वर्ष 1978 में सी एम एफ आर आइ में कार्यग्रहण किया और वर्ष 1982 में मात्स्यिकी अर्थविज्ञान एवं विस्तार प्रभाग के रूपायन तक मात्स्यिकी संपदा निर्धारण प्रभाग में काम किया. वर्ष 1984 में वे वरिष्ठ वैज्ञानिक और वर्ष 1944 में एस ई ई टी टी प्रभाग के अध्यक्ष बन गए. उन्होंने वर्ष 1998 में सी आइ एफ ई, मुम्बई में मात्स्यिकी अर्थविज्ञान के प्रोफसर का पदभार ग्रहण किया और दो वर्ष (1998-2000) तक मात्स्यिकी अर्थविज्ञान एवं विस्तार प्रभाग के अध्यक्ष के रूप में काम किया. वर्ष 2000 में उन्होंने एस ई ई टी टी प्रभाग के अध्यक्ष के रूप में सी एम एफ आर आइ में फिर से कार्यग्रहण किया और वे वर्ष 2010 तक 2 कार्यकाल के दौरान उसी पद पर कार्यरत हुए. सी एम एफ आर आइ में कार्यरत होते समय वे कई अनुसंधान परियोजनाओं और मात्स्यिकी अर्थविज्ञान एवं विस्तार के क्षेत्र में समाज आर्थिक संघात निर्धारण, संपदा प्रबंधन, विपणन, पर्यावरणीय अर्थविज्ञान, सहभागिता सह-प्रबंधन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण जैसे विशेष निर्धारण कार्यों में लगे हुए थे. उनके नेतृत्व में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर मत्स्यन गाँवों में ग्रामीण स्तर की किसान मेलाएं आयोजित की गयीं और सी एम एफ आर आइ में ए टी आइ सी भी स्थापित हुई तथा वे इसके प्रबंधक के पद पर कार्यरत थे. प्रसिद्ध राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में उनके लगभग 200 लेख प्रकाशित हैं. उनके नाम में दस किताबें / सी एम एफ आर आइ विशेष प्रकाशन हैं और इन में कुछ किताबें विश्वविद्यालयों और मात्स्यिकी कॉलेजों में संदर्भ ग्रंथ के रूप में निर्धारित की गयी हैं. वर्ष 2008-2013 तक वे कडलमीन के संपादकीय मंडल के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हुए. उन्होंने मात्स्यिकी अर्थविज्ञान एवं विस्तार विषय पर दिनांक 6 जनवरी, 2000 में मुम्बई में प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया और वे इस के आयोजक भी थे.

वरिष्ठ अधिकारियों को सेवानिवृत्ति पर सलामी

श्री ए.यागप्पन
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
मंडपम क्षेत्रीय केंद्र
31.05.2013

श्री पी.के.रवीन्द्रन
उच्च श्रेणी लिपिक
सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
31.05.2013

एम.आर.अर्पुतराज
टी-6(तकनीकी अधिकारी)
मंडपम क्षेत्रीय केंद्र
30.04.2013

श्रीमती उमा एस. भट्ट
टी-5 (तकनीकी अधिकारी)
मांगलूर अनुसंधान केंद्र
30.04.2013

श्री जी.सुब्रमण्य भट्ट
टी-5 (तकनीकी अधिकारी)
मांगलूर अनुसंधान केंद्र
31.05.2013

श्री एम.चेल्लप्पा
टी-5(तकनीकी अधिकारी)
टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र
31.05.2013

श्री सी.जे.जोसकुट्टी
टी-5(तकनीकी अधिकारी)
मुम्बई अनुसंधान केंद्र
31.05.2013

श्री बी.जी.कल्बाटे
टी-4 (व.तकनीकी सहायक)
मुम्बई अनुसंधान केंद्र
31.05.2013

श्री पोल सिगामणी
टी-4 (व.तकनीकी सहायक)
कन्याकुमारी क्षेत्र केंद्र
31.05.2013

डॉ.(श्रीमती) एस. गिरिजाकुमारी
टी-6 (तकनीकी अधिकारी-पुस्तकालय)
सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
30.06.2013

श्री वी.अच्युत राव
टी-5 (तकनीकी अधिकारी)
विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र
30.06.2013

श्री सीएच. एल्लितत्तय्या
टी-5 (तकनीकी अधिकारी)
विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र
30.06.2013

श्री के.नारायण राव
टी-5(तकनीकी अधिकारी)
श्रीकाकुलम क्षेत्र केंद्र
30.06.2013

श्री बी.तंकराज
टी-1-3 (क. तकनीकी सहायक)
टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र
30.06.2013

श्री एस.बालकृष्णन
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र
31.05.2013

श्री वी.समयमुत्तु
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र
30.06.2013

निधन

हमारे प्रिय सहयोगी श्री आर.सोमु के वियोग पर सी एम एफ आर आइ परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

श्री आर.सोमु, टी-5
(तकनीकी अधिकारी)
मद्रास अनुसंधान केंद्र
04.04.2013

माननीय केंद्र कृषि मंत्री कारवार में समुद्री पिंजरों का निरीक्षण करने का दृश्य

कडलमीन TM
cadalmin

कडलमीन
सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारियों को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।